प्रयागराज, रविवार 12 जुलाई 2026 से 18 जुलाई 2026 तक
वर्ष-14, अंक-28
पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार
हिन्दी साप्ताहिक

14th ANNIVERSARY

डाक पंजीयन नं. 99/2018-20

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.adhuniksamachar.com

ईरान पर 1000 मिसाइलें तान रखीं, मुझे मारने की कोशिश की तो तबाह कर देंगे, जवाबी कार्रवाई के आदेश दे चुका-ट्रम्प

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि अगर ईरान ने उनकी हत्या की कोशिश की तो अमेरिका ऐसा जवाब देगा, जैसा पहले कभी नहीं देखा होगा। ट्रुथ सोशल पर ट्रम्प ने लिखा कि ईरान की ओर 1000 मिसाइलें तैयार हैं और जरूरत पड़ने पर हजारों और मिसाइलें दागी जाएंगी।ट्रम्प ने कहा कि अगर ईरान ने उन पर हमला किया तो ईरान को पूरी तरह तबाह कर दिया जाएगा। उन्होंने दावा किया कि जवाबी कार्रवाई के आदेश पहले ही दिए जा चुके हैं और अमेरिकी सेना पूरी तरह तैयार है। उधर, इजराइली मीडिया कान न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका ने इजराइल से अपने 12 एफ-22 स्टेल्थ फाइटर जेट वापस बुलाने शुरू कर दिए हैं। ये विमान फरवरी से इजराइल के ओवदा एयरबेस पर तैनात थे। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि इन्हें ईरान के खिलाफ सैन्य अभियान के लिए भेजा गया था और इन्होंने हालिया हमलों में भी हिस्सा लिया था। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स:-ईरान बोला- इजराइल ने हमला किया तो नही बचेगा: ईरान की सुप्रीम नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल ने कहा कि अगर इजराइल ने उसके अहम ठिकानों पर फिर हमला किया तो कड़ा जवाब दिया जाएगा। इससे पहले इजराइली पीएम नेतन्याहू ने हमले की चेतावनी दी थी। अमेरिका बोला- होर्मुज पर ईरान का कंट्रोल नहीं: अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेंटकॉम) ने ईरान के उस दावे को खारिज कर दिया कि होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले जहाजों पर उसका नियंत्रण है। सेंटकॉम ने कहा कि अब तक 800 से ज्यादा कारोबारी जहाजों और 38 करोड़ बैरल कच्चा तेल होर्मुज पार कर गया है। कतर ने अमेरिका और ईरान से तनाव कम करने की अपील की: कतर ने दोनों देशों से समझौते का पालन करने और बातचीत जारी रखने की अपील की। साथ ही होर्मुज स्ट्रेट में जहाजों की सुरक्षित आवाजाही बनाए रखने पर जोर दिया। रूस बोला- ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी ने अमेरिका-इजराइल का साथ दिया:- यूएनएससी की आपात बैठक में रूस की प्रतिनिधि ने आरोप लगाया कि ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी ने ईरान के नागरिक ढांचे पर अमेरिका और इजराइल के हमलों का समर्थन किया। आईए की चेतावनी- तेल आपूर्ति पर खतरा: अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईए) ने कहा कि अमेरिका-ईरान तनाव बढ़ा तो वैश्विक तेल आपूर्ति प्रभावित हो सकती है और ऊर्जा संकट लंबा खिंच सकता है। ट्रम्प की हत्या का मुद्दा क्यों उठा? अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव के बीच एक बार फिर डोनाल्ड ट्रम्प की हत्या का मुद्दा सुर्खियों में है। इसकी शुरुआत तब हुई, जब मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया कि इजराइल ने अमेरिका को खुफिया अलर्ट दिया है कि ईरान ट्रम्प की हत्या की नई साजिश बना रहा है। हालांकि अमेरिकी अधिकारियों ने कहा कि इस इनपुट की पुष्टि नहीं हुई है। इसके बाद ट्रम्प ने कई बार कहा कि वह ईरान की हिटलिस्ट में सबसे ऊपर हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर उनकी हत्या की कोशिश हुई तो अमेरिका ईरान पर सबसे बड़ा हमला करेगा। तनाव तब और बढ़ गया, जब अली खामेनेई के अंतिम संस्कार में कुछ लोगों ने ट्रम्प की हत्या के नारे लगाए। इसके जवाब में ट्रम्प ने कहा कि अगर ईरान ने ऐसा किया तो हजारों मिसाइलों से जवाब दिया जाएगा और ईरान को पूरी तरह तबाह कर दिया जाएगा।

ईरान से ट्रम्प की दुश्मनी की शुरुआत कब हुई? इस विवाद की जड़ जनवरी 2020 में है। ट्रम्प के पहले कार्यकाल में अमेरिकी ड्रोन हमले में ईरान के सबसे ताकतवर सैन्य कमांडर कासिम सुलेमानी की मौत हुई थी। अमेरिका ने यह हमला इराक के बगदाद एयरपोर्ट के पास किया था। ईरान ने तभी कहा था कि वह सुलेमानी की मौत का बदला लेगा। इसके बाद अमेरिकी एजेंसियां कई बार दावा कर चुकी हैं कि ईरान ट्रम्प और उनके पूर्व अधिकारियों को निशाना बनाने की कोशिश कर सकता है। हालांकि ईरान लगातार इन आरोपों से इनकार करता रहा है।वहीं अमेरिकी न्यूज चैनल सीएनएन ने दावा किया है कि ईरान ने अपने क्षतिग्रस्त परमाणु ठिकानों को दोबारा तैयार करना शुरू कर दिया है। सीएनएन ने इंस्टीट्यूट फॉर साइंस एंड इंटरनेशनल सिक्योरिटी के साथ मिलकर सैटेलाइट तस्वीरों का विश्लेषण किया है।

'ट्रम्प को मार सकता हैं ईरान'- इजराइल का खुफिया इनपुट और अमेरिका ने दोबारा किया हमला, क्या रच रहे हैं नेतन्याहू!

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। 'ईरान ने ट्रम्प की हत्या के लिए एक नया प्लान तैयार किया है।' ये खुफिया इनपुट इजराइल ने अमेरिका को दिया है। इसके बाद ईरान को लेकर ट्रम्प के तेवर वापस सख्त हो गए। वो ईरानी नेताओं को 'गंदा' और 'शैतान' बताने लगे। अमेरिका ने 7-8 जुलाई की रात ईरान के 80 ठिकानों पर एयरस्ट्राइक कर दी। आखिर क्या थे इजराइल के खुफिया इनपुट दरअसल दावा हैं की 9 जुलाई को सबसे पहले अमेरिकी अखबार 'वॉल स्ट्रीट जर्नल' में एक रिपोर्ट छपी। इसमें कहा गया कि इजराइल ने अमेरिका को इनपुट दिया है कि ईरान ने ट्रम्प की हत्या की साजिश रची है। इसके बाद अमेरिकी मीडिया चैनल सीएनएन ने बताया कि ये इनपुट इसी हफ्ते दिया गया। रिपोर्ट में दो सोर्सेज के हवाले से कहा गया:- 'अमेरिका को हाल के हफ्तों में ट्रम्प की हत्या की संभावनाओं के बारे में लगातार खुफिया जानकारी मिल रही थी। हालांकि इस बार इजराइल ने ईरान की एक खास साजिश का अलर्ट दिया।' 'अमेरिकी खुफिया ऑफिसर्स को चिंता है कि ईरान कई मौजूदा और पूर्व सीनियर ऑफिसर्स को निशाना बना सकता है। अब अमेरिकी खुफिया एजेंसियां ऐसे लोगों पर नजर रख रही हैं, जिन्होंने ट्रम्प पर किसी तरह के हमले का जिक्र किया है, लेकिन अभी तक ऐसा कोई कदम नहीं उठाया है।' खुफिया इनपुट के बाद 1. ईरानी नेताओं को लेकर ट्रम्प के तेवर बदले:- 6 जुलाई को ईरान ने उसके तय रूट से अलग रास्ते से होर्मुज पार कर रहे 3 जहाजों पर हमला किया। 7 जुलाई को ट्रम्प तुर्किये में मौजूद थे। उन्होंने वहां पत्रकारों से कहा, 'मेरे हिसाब से अब शांति समझौता खत्म हो गया है।' उन्होंने ईरानी नेताओं के लिए 'गंदे' और 'बीमार' जैसे शब्द इस्तेमाल किए। जबकि इससे पहले तक ट्रम्प उन्हें 'समझदार' और 'मजबूत' वार्ताकार कह रहे थे। हालांकि ये साफ नहीं है कि इस समय तक अमेरिका को इजराइली अलर्ट मिल चुका था या नहीं। 2. ट्रम्प ने खुद कहा- 'उनकी 'किल लिस्ट में सबसे ऊपर', जहाज बदला:- बुधवार, 8 जुलाई की सुबह अमेरिका ने ईरान में 80 से ज्यादा ठिकानों पर बमबारी की। इसी दिन ट्रम्प को तुर्किये से वापस अमेरिका लौटना था। उन्होंने कतर से तोहफे में मिला एयर-फोर्स वन प्लेन छोड़कर अपने पुराने प्लेन से सफर किया। सीएनएन के मुताबिक, ईरान से बढ़ते तनाव के चलते सुरक्षा कारणों से ऐसा किया गया।8 जुलाई को ही ट्रम्प ने बड़ा बयान दिया, 'वे अमेरिकी लीडर, यानी मुझे हटाना चाहते हैं। मैंने आज सुबह देखा कि मैं उनकी हर लिस्ट में हूं। मैं अब तक थोड़ा किस्मत वाला रहा हूं, लेकिन हो सकता है ऐसा बहुत देर तक न हो पाए। ये शैतान और बीमार लोग हैं। हमें ये कैंसर जड़ से खत्म करना होगा। आपको कैंसर को जल्दी काटकर बाहर निकालना होता है, यही मेरी राय है।' 9 जुलाई को ट्रम्प ने दोबारा कहा, 'मुझे हाल ही में पता चला कि मैं हत्या की लिस्ट में टॉप पर हूं।' इन बयानों से ये साफ नहीं हुआ कि क्या ट्रम्प इजराइल से मिले अलर्ट की बात कर रहे थे। हालांकि जब व्हाइट हाउस प्रशासन से पत्रकारों ने इजराइल के अलर्ट को लेकर सवाल किया, तो उसने ट्रम्प के इन्हीं बयानों का हवाला दिया। यानी व्हाइट हाउस ने संकेत दिया कि ट्रम्प के अचानक बदले तेवर और गुस्से के पीछे इजराइली इनपुट हैं। 3. नेतन्याहू से नाराजगी के बीच फोन पर बातः- 9 जुलाई को नेतन्याहू ने ट्रम्प से फोन पर बात की है। जल्दी ही वे अमेरिका भी जाने वाले हैं। जबकि नेतन्याहू अब तक ईरान से बातचीत के पक्ष में नहीं रहे और इसे लेकर उनकी ट्रम्प से नाराजगी बन गई थी। कुछ अमेरिकी ऑफिसर्स ने सीएनएन को ये भी बताया कि गुरुवार रात को भी ईरान पर बड़े हमले की तैयारी थी। अमेरिकी युद्धपोत 'यूएसएस अब्राहम लिंकन' पर तैनात फाइटर जेट्स में हथियार लोड कर लिए गए थे। पायलट्स ने एक्सरसाइज की। लेकिन ईरान से बातचीत जारी है, इसलिए ऐन मौके पर हमला टाल दिया गया।

ट्रम्प बोले- ईरान ने बातचीत जारी रखने को कहा, दो दिन बाद ईरान-अमेरिका ने हमले रोके

इजराइल ने लेबनान पर ड्रोन अटैक किए

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर कहा कि ईरान ने बातचीत जारी रखने की इच्छा जताई है और अमेरिका इसके लिए तैयार हो गया है। हालांकि, ट्रम्प ने यह भी कहा कि दोनों देशों के बीच हुआ सीजफायर अब खत्म हो चुका है। ईरान और अमेरिका के बीच दो दिनों तक चली सैन्य कार्रवाई के बाद फिलहाल गोलीबारी थम गई है। अल जजीरा के मुताबिक, अब मध्यस्थता कर रहे देश दोनों पक्षों के बीच कूटनीतिक बातचीत फिर शुरू कराने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि तनाव और न बढ़े। वहीं, लेबनान की नेशनल न्यूज एजेंसी (एनएनए) के मुताबिक, इजराइल ने दक्षिणी लेबनान के नबातियेह प्रांत में दो और ड्रोन हमले किए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, एक हमला कफर रेमान और दूसरा नबातियेह अल-फर्रा का कस्बे में हुआ। फिलहाल किसी के हताहत होने की भी खबर नहीं है। ईरान बोला- यूएई अमेरिका से मिला हुआ:- ईरान के उप विदेश मंत्री काजेम गरीबाबादी ने अमेरिका और यूएई पर अमेरिका से मिलीभगत का आरोप लगाया है। एक्स पर लिखते हुए गरीबाबादी ने कहा कि अमेरिकी वाणिज्य विभाग ने निर्यात नियंत्रण नियमों में ढील देने और यूएई के व्यापारिक दर्जे को बढ़ाने वाला एक दस्तावेज जारी किया है।

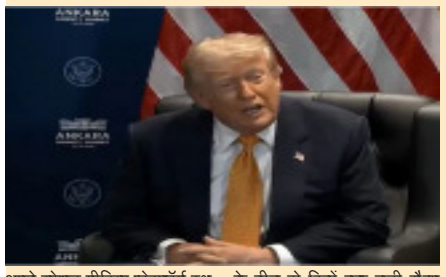

गडकरी बोले-ई20 पेट्रोल से गाड़ी खराब, तो कंपनियां मुफ्त पुर्जे बदलें,माना- इससे माइलेज घटा

नयी दिल्ली। 20फीसदी एथेनॉल मिक्स पेट्रोल से गाड़ी खराब होने पर कंपनियां फ्री में पार्ट्स बदलेंगी। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि सरकार ने कंपनियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे ई20 फ्यूल से प्रभावित पुरानी गाड़ियों के पार्ट्स को बिना किसी एक्स्ट्रा चार्ज के बदलें। सोशल मीडिया पर चल रही खबरें मनगढ़ंत और झूठी:-गडकरी ने एथेनॉल से गाड़ियां खराब होने के दावों को सिरे से नकार दिया। उन्होंने चुनौती देते हुए कहा, 'मुझे एक भी ऐसी कार दिखाएं जो ई20 फ्यूल की वजह से खराब हुई हो या जिसे कोई नुकसान पहुंचा हो। सोशल मीडिया पर जो कुछ भी चलाया जा रहा है, वह एक सोची-समझी रणनीति के तहत तैयार किया गया झूठा नैरेटिव है। अब तक ऐसी कोई भी कार नहीं मिली है, जो इस ई20 पेट्रोल के कारण बंद पड़ी हो।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

भारतीय मूल के अनिल मेनन इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन जाएंगे

वॉशिंगटन। 14 जुलाई को भारतीय मूल के अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री अनिल मेनन नासा के अगले मिशन पर इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन जाएंगे। अनिल के साथ रूस की अंतरिक्ष यात्री अन्ना किकिना और पयोत्र दुब्रोव भी होंगे। ये मिशन नासा और स्पेस-एक्स के जॉइंट कमर्शियल क्रू प्रोग्राम का हिस्सा है। ये स्पेस-एक्स से Falcon-9 और क्रू ड्रेगन रॉकेट से लॉन्च किया जाएगा। अनिल भारतीय मूल के अमेरिकी फिजीशियन और अंतरिक्ष यात्री हैं। अनिल 2018 में पहली बार स्पेस-एक्स से जुड़े और कंपनी की पहली ह्यूमन फ्लाइट में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 2021 में अनिल नासा के एस्ट्रोनॉट ट्रेनिंग का हिस्सा रहे। इसके साथ ही वे हिमालयन रेस्क्यू एसोसिएशन का भी हिस्सा रह चुके हैं। अनिल अंतरिक्ष यात्री बनने से पहले स्पेस-एक्स में फ्लाइट सर्जन के तौर पर काम कर चुके हैं। अनिल लंबे समय तक अंतरिक्ष में रहकर ह्यूमन बॉडी पर पड़ने वाले प्रभाव पर रिसर्च करेंगे। आईएसएस के इस ह्यूमन मिशन में स्वास्थ्य, बायोलॉजी, अर्थ ऑब्जर्वेशन और नई अंतरिक्ष तकनीकों से जुड़े प्रयोग किए जाएंगे।

आईएनएस महेंद्रगिरि नौसेना में कमीशन होगा

नयी दिल्ली। 11 जुलाई को भारतीय नौसेना विशाखापत्तनम में प्रोजेक्ट 17ए स्टील्थ फ्रिगेट 'आईएनएस महेंद्रगिरि (एफ 38)' को ऑफिशियली नौसेना बेड़े में शामिल करेगी। भारतीय नौसेना के वॉरशिप डिजाइन ब्यूरो ने आईएनएस महेंद्रगिरि को डिजाइन किया है। आईएनएस महेंद्रगिरि मुंबई की मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने बनाया है। इस जहाज का नाम पूर्वी घाट के महेंद्रगिरि पर्वत श्रृंखला के नाम पर रखा गया है। ये फ्रिगेट आधुनिक 'कंबाइंड डीजल या गैस' (सीओडीओजी) प्रोपल्शन सिस्टम से चलता है। प्रोपल्शन सिस्टम से फ्रिगेट न सिर्फ तेज स्पीड में चलता है, बल्कि लंबे समय तक समुद्री अभियानों में टिके रहने की कैपेसिटी भी बढ़ती है। 75 प्रतिशत से ज्यादा स्वदेशी पुर्जों और टेक्नोलॉजी से बना 'महेंद्रगिरि', सरकार की 'आत्मनिर्भर भारत' पहल का एक बेहतरीन उदाहरण है। आईएनएस महेंद्रगिरि उन्नत स्टील्थ (कम रडार पहचान) वाली तकनीक से लैस है। आईएनएस महेंद्रगिरि ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल और बराक-8 वायु रक्षा मिसाइल सिस्टम से लैस है। आईएनएस महेंद्रगिरि पनडुब्बी रोधी यानी, एंटी सबमरीन वारफेयर सिस्टम, वायु रक्षा तथा सतही युद्ध अभियानों में सक्षम है। आईएनएस महेंद्रगिरि में अत्याधुनिक रडार, सेंसर, इलेक्ट्रॉनिक वार सिस्टम और हाई लेवल ऑटोमेशन से लैस है।प्रोजेक्ट 17ए के सभी जहाजों का निर्माण मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने और गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स द्वारा किया जा रहा है।आईएनएस महेंद्रगिरि का नौसेना में शामिल होना भारत की 'आत्मनिर्भर भारत' और स्वदेशी रक्षा निर्माण क्षमता को और मजबूत करता है। आईएनएस महेंद्रगिरि में सतह से सतह और सतह से हवा में मार करने वाले आधुनिक मिसाइल सिस्टम शामिल हैं। एडवांस इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर सूट और एंटी-सबमरीन वॉरफेयर सिस्टम सिर्फ युद्ध लड़ने के लिए नहीं, बल्कि कई सारे अभियानों में भी हिस्सा ले सकता है। ये हवा, सतह और पानी के नीचे- तीनों मोर्चों पर काम कर सकती है। ये समुद्री सुरक्षा, पावर प्रोजेक्शन, मानवीय सहायता और आपदा राहत तथा खोज एवं बचाव अभियानों में भी काम कर सकती है।प्रोजेक्ट 17ए भारतीय नौसेना का अगली पीढ़ी की स्टेल्थ फ्रिगेट विकसित करने का कार्यक्रम है। प्रोजेक्ट 17ए में से चार नीलगिरि, उदयगिरि, तारागिरि, महेंद्रगिरि का निर्माण मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) ने किया है। जबकि तीन हिमगिरि, दूनागिरि, विंध्यगिरि का निर्माण गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड कर रहा है।

2029 से लागू हो सकता है वन-नेशन वन-इलेक्शन, संसदीय समिति के अध्यक्ष बोले- 99फीसदी लोग पक्ष में

नयी दिल्ली। संसद की संयुक्त समिति (जेपीसी) कोशिश कर रही है कि 2029 के लोकसभा चुनावों तक 'वन नेशन वन इलेक्शन' लागू हो सके। समिति के अध्यक्ष पीपी चौधरी के मुताबिक, अब तक चर्चा में शामिल लगभग 99फीसदी नागरिक और संगठनों ने इसका समर्थन किया है। समिति ने गोवा के मुख्यमंत्री और कैबिनेट मंत्रियों सहित कई राज्यों के विशेषज्ञों से इस पर सलाह ली है। गोवा दौरे पर गए समिति के सदस्य और भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने शुक्रवार को कहा कि बार-बार चुनाव से छोटे राज्य गोवा पर इतना प्रभाव पड़ता है, तो बड़े राज्यों और पूरे देश पर इसका असर और भी ज्यादा होता होगा।उन्होंने बताया कि समिति का अगला दौरा लखनऊ का होगा, जहां मुख्यमंत्री, विपक्ष के नेता, राजनीतिक दलों और विभिन्न विभागों के अधिकारियों से चर्चा की जाएगी। जेपीसी 17 जुलाई को अपनी रिपोर्ट को अंतिम रूप देकर संसद में पेश करेगी। वन नेशन वन इलेक्शन से जुड़े 5 कॉमन सवाल:-1. आखिर इसका क्या मतलब है? लोकसभा, विधानसभा, स्थानीय निकायों के चुनाव अलग-अलग कराने के बजाय एक साथ कराना। 2. जिन राज्यों का कार्यकाल 2029 के बाद भी बचा होगा, उनका क्या होगा? संविधान संशोधन के जरिए उन राज्यों के कार्यकाल को समय से पहले ही समाप्त करके 2029 के चुनावी चक्र के साथ जोड़ा जाएगा। 3. जिनका कार्यकाल 2029 से पहले खत्म हो रहा होगा, उनका क्या होगा? वहां कुछ समय के लिए राष्ट्रपति शासन लग सकता है या फिर केवल 2029 तक के लिए चुनाव संभव। 4. इसमें क्या कानूनी चुनौतियां आएंगी? कई अनुच्छेदों (जैसे 83, 172, 356) में संशोधन करना होगा। संसद में दो-तिहाई बहुमत और आधे राज्यों की मंजूरी चाहिए। 5.अगर बीच में ही कोई सरकार गिर जाए, तो क्या नियम प्रस्तावित हैं? इस नए प्रस्ताव के तहत मध्यावधि चुनाव पूरे 5 साल के लिए नहीं कराए जाएंगे, बल्कि केवल बचे हुए कार्यकाल के लिए ही कराए जाएंगे, ताकि अगला मुख्य चक्र न बिगड़े।वन नेशन, वन इलेक्शन पर सुरक्षित रास्ता भी तलाश रही सरकार:-केंद्र सरकार वन नेशन वन इलेक्शन के लिए सुरक्षित रास्ता तलाश रही है। इसके लिए बनी जेपीसी से जुड़े सूत्रों के मुताबिक समिति 'टू-फेज ट्रांजिशन मॉडल' पर विचार कर रही है, जिससे राज्यों में बार-बार चुनाव कराने या विधानसभाओं के कार्यकाल में बहुत बड़ी कटौती करने की जरूरत न पड़े। पूरे देश को एक साथ चुनावी चक्र में लाने के बजाय दो चरणों- 2029 और 2034 में बढ़ने का विकल्प सबसे व्यावहारिक माना जा रहा है। पहले चरण में 2029 के लोकसभा चुनाव के साथ करीब 20 राज्यों के विधानसभा चुनाव कराए जा सकते हैं। संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) की अवधि 2026 के मानसून सत्र तक बढ़ाई जा चुकी है। ऐसे में 2029 से चुनावी चक्र एक करने की प्रक्रिया शुरू हो सकती है। वहीं, 2034 तक पूरे देश को साझा चुनावी चक्र में लाने का लक्ष्य है। संविधान में गुंजाइश है, लेकिन सहमति पर जोर:-लॉ कमीशन के पूर्व सदस्य और मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी के लॉ कॉलेज के डीन आनंद पालीवाल ने कहा कि एक देश-एक चुनाव' को चरणबद्ध तरीके से लागू करने के लिए संवैधानिक विकल्प मौजूद हैं।

ऑस्ट्रेलिया की बिग बैश लीग भारत में होगी

सिडनी। 10 जुलाई को ऑस्ट्रेलिया की प्रतिष्ठित बिग बैश लीग (बीबीएल) 2026-27 का पहला मुकाबला भारत के चेन्नई में खेले जाने का ऐलान हुआ। ये बीबीएल के इतिहास में पहली बार होगा जब लीग का कोई आधिकारिक मुकाबला ऑस्ट्रेलिया के बाहर आयोजित होगा। ये पहला मौका है, जब भारत किसी विदेशी क्रिकेट लीग का मैच होस्ट करने जा रहा है। ये मैच 12 दिसंबर 2026 को एम. ए. चिदंबरम स्टेडियम (चेन्नई) में होगा। इस लीग का पहला मैच मेलबर्न रेनेगेड्स और पर्थ स्कॉर्चर्स के बीच होगा। ये बीबीएल के इतिहास का पहला मैच है जो ऑस्ट्रेलिया से बाहर होगा। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच स्पोर्ट्स कोलैबोरेशन रोडमैप को बढ़ावा देने के लिए ये पहल की गई है। इसका उद्देश्य भारत में बीबीएल की लोकप्रियता बढ़ाना, क्रिकेट सहयोग को मजबूत करना और लीग की पहुंच का विस्तार करना है। ऑस्ट्रेलिया की बिग बैश लीग (बीबीएल) का 2026-27 सीजन का ओपनर चेन्नई में होगा। ऑस्ट्रेलिया की बिग बैश लीग टी20 क्रिकेट लीग है, इसमें दो टूर्नामेंट होते हैं। एक टूर्नामेंट पुरुषों की केएफसी बिग बैश लीग और दूसरी महिलाओं की वेबर विमेंस बिग बैश लीग इसमें होती है।

लॉर्ड्स में 142 साल बाद वुमेंस टीम ने क्रिकेट खेला

लंदन। 10 जुलाई को क्रिकेट का मक्का कहे जाने वाले लॉर्ड्स में पहली बार महिला टीम ने टेस्ट मैच खेला। जुलाई 1884 में इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच लॉर्ड्स में पहला मेंस टेस्ट मैच खेला गया था। इसके 142 साल बाद अब इस मैदान पर महिला टेस्ट मैच होगा, जिसमें भारत और इंग्लैंड की टीमें आमने-सामने होंगी। लॉर्ड्स को होम ऑफ क्रिकेट भी कहा जाता है और ये महिला क्रिकेट इतिहास का 153वां टेस्ट मैच होगा। लॉर्ड्स में पहला महिला वनडे 4 अगस्त 1976 को इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेला गया था। भारत और इंग्लैंड के बीच अब तक 15 महिला टेस्ट खेले गए हैं। इनमें भारत ने 3 और इंग्लैंड ने 1 मैच जीता है, जबकि 11 मुकाबले ड्रॉ रहे हैं। भारतीय टीम की कैप्टन हरमनप्रीत कौर हैं और स्मृति मंधाना टीम की वाइस कैप्टन हैं। भारत ने हरलीन देओल, स्पिनर श्री चरणी और तेज गेंदबाज नंदनी शर्मा को पहली बार टेस्ट टीम में शामिल किया है.इसके साथ ही इंग्लैंड की ओर से कैप्टन नैट सिवर-ब्रंट हैं।

बीएसएनएल ने भारत में लॉन्च किया अपना पहला सैटेलाइट फोन

नयी दिल्ली। 10 जुलाई सरकारी टेलीकॉम कंपनी बीएसएनएल ने अपनी नई सैटेलाइट फोन सर्विस शुरू की इस सैटेलाइट फोन की कीमत लगभग 1.34 लाख रुपए रखी गई है। ये सैटेलाइट फोन बिना किसी मोबाइल टावर के सीधे सैटेलाइट के जरिए कॉल कर सकेंगे। इस फोन का उपयोग खासकर आपदा क्षेत्रों, घने जंगलों और समुद्री सीमाओं पर काम करने वालों के लिए बनाया गया है। ये कठिन इलाकों में कम्युनिकेशन का एक भरोसेमंद साबित होगा।बीएसएनएल ने ये फोन हैंडसेट को ग्लोबल सैटेलाइट नेटवर्क प्रोवाइडर 'इनमारसैट' के साथ पार्टनरशिप में बनाया है। इस सैटेलाइट फोन को खरीदने के लिए सरकार की अनुमति लेना जरूरी होगा। ये आम फोन या गैजेट की तरह सीधे दुकान पर नहीं मिलेगा। भारत में सैटेलाइट फोन को लेकर कड़े नियम हैं।इस फोन को खरीदने या इस्तेमाल करने से पहले यूजर को डिपार्टमेंट ऑफ टेलीकम्युनिकेशंस (डॉट) से मंजूरी या ऑथराइजेशन लेना अनिवार्य होगा।सरकार की बिना मंजूरी के सैटेलाइट फोन रखना या इसे ऑपरेट करना भारतीय नियमों के तहत कानूनी कार्रवाई का कारण बन सकता है। भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) इस तकनीक के साथ वैश्विक सैटेलाइट संचार बाजार में प्रतिस्पर्धा कर रहा है।

वर्ल्ड बैंक ने 890 मिलियन अमेरिकी डॉलर को मंजूरी दी

नयी दिल्ली। 10 जुलाई को विश्व बैंक ने भारत के रूफटॉप सोलर कार्यक्रम के लिए 890 मिलियन अमेरिकी डॉलर (लगभग रु7,400 करोड़) की वित्तीय सहायता को मंजूरी दी। वर्ल्ड बैंक ने ये मंजूरी हर घर मुफ्त बिजली योजना को विस्तार देने के लिए दी है। इससे देश में क्लीन एनर्जी को बढ़ावा मिलेगा। इसका फायदा घर में उपयोग की जा रही बिजली में होगा। इससे स्वच्छ एवं नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार और बिजली में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा।इसकी शुरुआत साल 2024 में हुई थी। जिसमें लोगों को घरों की छत पर सोलर पैनल लगवाने के लिए सब्सिडी दी जाती है। योजना में लोगों को सोलर पैनल की लागत का लगभग 40फीसदी तक सब्सिडी मिलती है। सरकार का उद्देश्य है कि ज्यादा से ज्यादा लोग अपने घरों की खाली छत पर सोलर पैनल लगाकर बिजली का उत्पादन करें।

प्रदेश के 11 लाख से अधिक शिक्षा कर्मियों के लिए सामाजिक सुरक्षा का ऐतिहासिक कदम

शिक्षा विभाग और भारतीय स्टेट बैंक के ऐतिहासिक समझौते से शिक्षकों को मिलेगा 2 लाख से 1.60 करोड़ तक का सुरक्षा कवच,मुख्यमंत्री की मौजूदगी में वाराणसी में हुआ बहुउद्देशीय समझौता ज्ञापन, रायबरेली में कैबिनेट मंत्री डॉ. मनोज कुमार पांडेय ने कार्यक्रम में दिलाई जानकारी,दुर्घटना बीमा, टर्म लाइफ इंश्योरेंस, दिव्यांगता कवर समेत 30 से अधिक बैंकिंग सुविधाएं मिलेंगी निःशुल्क

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग के इतिहास में बुधवार को सामाजिक सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण अध्याय जुड़ गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में वाराणसी में बेसिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग तथा भारतीय स्टेट बैंक के बीच बहुउद्देशीय समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस ऐतिहासिक पहल का सीधा प्रसारण रायबरेली में आयोजित कार्यक्रम में देखा गया, जहां प्रदेश के कैबिनेट मंत्री डॉ. मनोज कुमार पांडेय, जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका, भारतीय स्टेट बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक राकेश कुमार पांडेय तथा

शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने प्रदेश के लाखों शिक्षा कर्मियों को मिलने वाली सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी दी। समझौते के तहत प्रदेश के पांच लाख से अधिक नियमित शिक्षक तथा लगभग छह लाख शिक्षामित्र, अनुदेशक, रसोइया और अन्य शिक्षा कर्मी सामाजिक सुरक्षा के दायरे में आएंगे। भारतीय स्टेट बैंक के माध्यम से वेतन खाताधारकों को 2 लाख से 1.60 करोड़ रुपये तक का व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा, 10 लाख रुपये तक का टर्म लाइफ इंश्योरेंस, एक करोड़ रुपये तक का पूर्ण एवं आंशिक दिव्यांगता बीमा कवर तथा 30 से अधिक बैंकिंग सेवाएं निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएंगी। कार्यक्रम में भारतीय स्टेट बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक राकेश कुमार थे।

नंद गोपाल गुप्ता नंदी के पुनर्प्राप्त जन्मोत्सव दिवस पे सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। मां सिद्धेश्वरी मंदिर में

गंगोत्री नगर इंदलपुर प्रयागराज में नंद गोपाल गुप्ता नंदी जी के पुनः प्राप्त जन्मोत्सव की मंडल पदाधिकारी द्वारा श्री सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया मंदिर कार्यक्रम व्यवस्थापक में डॉक्टर ओमप्रकाश आर्य मंडल अध्यक्ष श्री रजत दुबे महामंत्री श्री ओमप्रकाश मिश्रा दिनेश सिंह मंडल मंत्री श्री युवराज सिंह श्रीमती उर्मिला यादव सेक्टर संयोजक श्री श्याम लाल यादव प्रेम नारायण भारतीय वरिष्ठ पदाधिकारी एवं सहयोगिकरण दिलीप केसरवानी पूर्व मंडल अध्यक्ष एवं पार्षद परमेश्वर प्रसाद वरिष्ठ भाजपा नेता की प्रति सोनकर उपाध्यक्ष अनुसूचित मोर्चा श्री राजू गुप्ता सरस्वती मिशन भंडार श्री धर्मपाल श्री अभिषेक आर्य युवा नेता ओम नारायण पंकज श्री कुलदीप कुमार वरिष्ठ सहयोगी सोनू भारतीय जियालाल दिनेश कुमार विश्वकर्मा बृजेश कुमार तुषार कुमार ज्योति भारतीय दानिश इकबाल शबनम बानो शशिकांत भारतीय आशीष कुमार तौसीफ अहमद अभिषेक पाल अन्य सहयोगीगढ़ उपस्थित हुए।

'वृक्षारोपण महायज्ञ-2026' को जनआंदोलन बनाने के दिए गए निर्देश

जिलाधिकारी ने की समीक्षा बैठक, जनप्रतिनिधियों एवं आमजन की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित कराने के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शुक्रवार को इसे जनभागीदारी का महाअभियान बनाया जाए। उन्होंने सभी खंड से पौधों की उपलब्धता, गड्ढों की तैयारी, सिंचाई, सुरक्षा व्यवस्था

जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में दिनांक 12 जुलाई 2026 को आयोजित होने वाले 'वृक्षारोपण महायज्ञ-2026' की तैयारियों के संबंध में समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ कार्यक्रम की रूपरेखा, पौधरोपण स्थलों, जनसहभागिता एवं विभागवार दायित्वों की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में डीएफओ द्वारा अवगत कराया गया कि शासन द्वारा जनपद में वृक्षारोपण का लक्ष्य 2026-27 हेतु 5537972 निर्धारित किया गया है, जिसके अंतर्गत दिनांक 05 जून को 808000 वृक्षारोपण कराया गया तथा 12 जुलाई को जनपद में कराए जाने वाले वृक्षारोपण का लक्ष्य 4723800 है। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि वृक्षारोपण महायज्ञ को केवल एक सरकारी कार्यक्रम तक सीमित न रखते हुए इसे जनभागीदारी का महाअभियान बनाया जाए। उन्होंने सभी खंड विकास अधिकारियों, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका/ नगर पंचायत एवं संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रत्येक नगरीय क्षेत्र, विकास खंड स्तर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों, ग्राम प्रधानों, जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, स्वयं सहायता समूहों, छात्र-छात्राओं, सामाजिक संगठनों एवं आम नागरिकों को आमंत्रित कर उनकी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक पौधा पर्यावरण संरक्षण एवं आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य का आधार है। इसलिए पौधरोपण के साथ-साथ उसकी सुरक्षा एवं नियमित देखभाल की भी समुचित व्यवस्था की जाए, ताकि लगाए गए पौधे वृक्ष बनकर पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। जिलाधिकारी ने सभी विभागों को अपने-अपने निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप समय से पौधों की उपलब्धता, गड्ढों की तैयारी, सिंचाई, सुरक्षा व्यवस्था तथा कार्यक्रम स्थलों पर आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण अभियान की प्रत्येक गतिविधि का प्रभावी अनुश्रवण किया जाए तथा कार्यक्रम को उत्सव के रूप में आयोजित कर अधिकाधिक लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया जाए। बैठक में संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि अभियान के सफल क्रियान्वयन के लिए आपसी समन्वय के साथ कार्य करें तथा शासन की मंशा के अनुरूप 'वृक्षारोपण महायज्ञ-2026' को जनपद में ऐतिहासिक एवं सफल बनाया जाए। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, डीएफओ प्रखर मिश्र, अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) सहदेव मिश्र,अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहें।

डीएम के निर्देश पर जनपद में अंश निर्धारण (आरटीके) कार्य में तेजी, 92.07 प्रतिशत कार्य पूर्ण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शुक्रवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के निर्देशानुसार जनपद में अंश निर्धारण (आरटीके) कार्य निर्धारित समयसीमा के अंतर्गत तेजी से कराया जा रहा है। राजस्व विभाग द्वारा प्राप्त प्रगति रिपोर्ट के अनुसार जनपद में कुल 15,78,414 अंशों के सापेक्ष 14,53,301 अंशों का आर0टी0के0 कार्य पूर्ण कर लिया गया है, जिससे जनपद की कुल प्रगति 92.07 प्रतिशत हो गई है। जिलाधिकारी के निर्देशन में सभी तहसीलों में प्रतिदिन लक्ष्य के अनुरूप कार्य कराया जा रहा है। दिनांक 09 जुलाई 2026 को 150 नए अंशों का निर्धारण कार्य संपन्न किया गया, जिससे जनपद की प्रगति में और वृद्धि हुई है। तहसीलवार प्रगति में सलोन तहसील 99.92 प्रतिशत कार्य पूर्ण कर प्रथम स्थान पर है। इसके अतिरिक्त ऊंचाहार में 93.48 प्रतिशत, महाराजगंज में 91.17 प्रतिशत, लालगंज में 90.15 प्रतिशत, डलमऊ में 88.44 प्रतिशत तथा रायबरेली सदर में 88.30 प्रतिशत कार्य पूर्ण किया जा चुका है। जिलाधिकारी ने संबंधित उपजिलाधिकारियों एवं राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया है कि शेष कार्यों को भी पूरी गुणवत्ता एवं समयबद्धता के साथ पूर्ण कराया जाए। उन्होंने कहा कि अंश निर्धारण कार्य राजस्व अभिलेखों को अद्यतन एवं पारदर्शी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण है, इसलिए सभी अधिकारी आपसी समन्वय से कार्य करते हुए शत-प्रतिशत लक्ष्य शीघ्र प्राप्त करना सुनिश्चित करें।

उदप्रद कौशल विकास मिशन प्रयागराज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। उदप्रद कौशल विकास मिशन, राजकीय आई0टी0आई0 विश्व युवा कौशल दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 14 जुलाई, 2026 को प्रातः 09:00 बजे से सायं 04:00 बजे तक को मां गायत्री महाविद्यालय मवैया नैनी, प्रयागराज में ' रोजगार मेले का आयोजन किया जा रहा है।उक्त मेले में निजी क्षेत्र की 20 से अधिक कम्पनियों द्वारा लगभग 3000 रिक्त पदो पर चयन की कार्यवाही की जायेगी। रोजगार मेले में जूनियर हाई स्कूल, इण्टर, स्नातक, आई0टी0आई0, डिप्लोमा, बी0टेक, उ0प्र0 कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत प्रशिक्षित 18 से 35 वर्ष के अभ्यर्थी अपने समस्त शैक्षणिक प्रमाण पत्र, अंक पत्र एवं जाति प्रमाण पत्र की छायाप्रति के साथ प्रतिभाग कर सकते है। मेले में प्रतिभाग हेतु प्रतिभागी निम्न क्यू0आर0 कोड के माध्यम से पंजीकरण कर सकते है।

आधारशिला वृद्ध आश्रम में लायंस क्लब प्रयागराज गौरव एवं एएसजी हॉस्पिटल द्वारा निशुल्क नेत्र एवं दंत चिकित्सा शिविर का सफल आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। लायंस क्लब

प्रयागराज गौरव एवं एएसजी हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान

में आधारशिला वृद्ध आश्रम में निशुल्क नेत्र एवं दंत चिकित्सा शिविर का सफल आयोजन किया

गया। मंडल सह पीआरओ लायन हिमांशु गुप्ता ने बताया शिविर में 63 नेत्र रोगियों एवं 65 दंत रोगियों का विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा परीक्षण एवं परामर्श किया गया। नेत्र परीक्षण के दौरान जिन मरीजों की दृष्टि में समस्या पाई गई, उनका विस्तृत परीक्षण (स्कैनिंग) किया गया तथा उन्हें शीघ्र ही निशुल्क चश्मे उपलब्ध कराए जाएंगे। साथ ही सभी आवश्यक मरीजों को निशुल्क दवाइयाँ, टूथपेस्ट एवं माउथवॉश वितरित किए गए। शिविर में डॉ. आर. के. सिंह (District Dental Chairperson), डॉ. संगम लाल विश्वकर्मा (Club Vision Chairperson) एवं डॉ. शुभांशु जायसवाल ने अपनी विशेषज्ञ सेवाएँ प्रदान करते हुए मरीजों का परीक्षण, उपचार एवं आवश्यक परामर्श दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. पुष्पेंद्र सिंह (अध्यक्ष, लायंस क्लब प्रयागराज गौरव), लायन सुनील गुप्ता (कोषाध्यक्ष), लायन महेश केसरवानी, लायन नीलम गुप्ता, लायन अलका विश्वकर्मा तथा पूर्व अध्यक्ष लायन शीतल प्रसाद श्रीवास्तव का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर क्लब पदाधिकारियों ने कहा कि लायंस क्लब का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाना तथा सेवा, समर्पण और मानवता के मूल्यों को सशक्त बनाना है। भविष्य में भी इसी प्रकार के सेवा प्रकल्प आयोजित किए जाते रहेंगे।

योगी सरकार में उच्च शिक्षा की नई उड़ान,चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी यूपी में स्कॉलर समिट 2026 फेज़ 2 शुरू, 750 मेधावी सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) उन्नाव/लखनऊ। सोमवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में वैश्विक मानक स्थापित कर रहा है। इसी कड़ी में देश की पहली एआई ऑगमेंटेड मल्टीडिसिप्लिनरी यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी उत्तर प्रदेश में दो दिवसीय 'सीयू स्कॉलर समिट 2026' के फेज 2 का रविवार को भव्य शुभारंभ हुआ। समिट के पहले दिन बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश समेत 12 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के 750 से अधिक मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, प्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश में शिक्षा और कौशल विकास को उद्योग की जरूरतों के अनुरूप बदला जा रहा है। उन्होंने कहा कि चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी ने 3,000 से अधिक मेधावी विद्यार्थियों को लगभग 50 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति देकर नया आयाम स्थापित किया है। यह साबित करता है कि योगी सरकार की नीतियों में आर्थिक संसाधनों की कमी किसी भी प्रतिभा की शिक्षा में बाधा नहीं बनेगी। उन्होंने कहा कि आज प्रतिस्पर्धा के दौर में युवाओं को एआई, डेटा साइंस, साइबर सिक्योरिटी, एयरोस्पेस और डिफेंस जैसी उभरती तकनीकों में दक्ष होना होगा। 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत-2047 के विजन को योगी सरकार धरातल पर उतार रही है। हमारा लक्ष्य है कि यूपी का युवा नौकरी मांगने वाला नहीं, नौकरी देने वाला बने।' उन्होंने कहा कि प्रदेश में बेटियों को भी उच्च शिक्षा और नवाचार के क्षेत्र में बराबरी के अवसर मिल रहे हैं। सीयू यूपी के मैनेजिंग डायरेक्टर जय इंदर सिंह संधू ने कहा कि एक वर्ष पहले हमने स्पष्ट विजन के साथ सीयू यूपी की नींव रखी थी। आज हमारे कैंपस में एडवांस लैब्स, जीपीयू इंफ्रास्ट्रक्चर, एआई स्पेस और विश्वस्तरीय रिसर्च सुविधाएं हैं। उन्होंने बताया कि इंडस्ट्री-ड्रिवन लर्निंग मॉडल के कारण कई छात्र पहले ही ग्लोबल कंपनियों में इंटर्नशिप के लिए चयनित हो चुके हैं। एआई हर क्षेत्र बदल रहा है। सीयू यूपी देश का पहला एआई स्पेस विकसित कर छात्रों को भविष्य के लिए तैयार कर रही है। यूनिवर्सिटी ने शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए सीयूसीईटी के माध्यम से 50 करोड़ रुपये तक की स्कॉलरशिप की घोषणा की थी। मेरिट के आधार पर विद्यार्थियों को 100 प्रतिशत तक की स्कॉलरशिप मिली है। पहले दिन इंजीनियरिंग और कंप्यूटिंग के 750 से अधिक विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। 'फ्रॉम स्कॉलर टू फ्यूचर-रेडी प्रोफेशनलः एआई, एयरोस्पेस, डिफेंस एंड इंजीनियरिंग' थीम पर हुए सत्रों में पॉलिसी मेकर्स, एजुकेशनिस्ट्स, इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स और एलुमनाई ने फ्यूचर स्किल्स पर मंथन किया। यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के प्रो. डॉ. ल्यूक डिकेन्स और सीयू यूपी के प्रो. डॉ. थिपेंद्र पाल सिंह ने ग्लोबल करियर ऑपर्च्युनिटीज़ पर संवाद किया। 'फ्रॉम सीयू क्लासरूम्स टू ग्लोबल करियर्स' सेशन में एलुमनाई ने सफलता के अनुभव साझा किए।

डीएम-एसपी ने थाना दिवस पर सुनी लोगों की शिकायतें,जनसमस्याओं के त्वरित निस्तारण के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। थाना समाधान दिवस

के अवसर पर जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका व पुलिस अधीक्षक रवि कुमार ने थाना भदोखर पहुँचकर नागरिकों की समस्याएं सुनीं। थाना दिवस के दौरान विभिन्न प्रकरणों में भूमि विवाद, पारिवारिक, राजस्व संबंधी शिकायते व सड़क एवं सार्वजनिक सुविधाओं से जुड़ी शिकायतें प्राप्त हुईं। जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने संबंधित राजस्व एवं पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी शिकायतों का गंभीरता से संज्ञान लेते हुए टीम बनाकर मौके पर जाकर गुणवत्तापूर्ण और समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। जिलाधिकारी ने अधिकारियों से कहा कि जनता की समस्याओं के समाधान में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि थाना समाधान दिवस का उद्देश्य जनता को त्वरित न्याय उपलब्ध कराना है, इसलिए अधिकारी मौके पर उपस्थित होकर शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता से करें। थाना दिवस में क्षेत्राधिकारी सहित पुलिस/राजस्व विभाग के कार्मिक मौजूद रहे।

भारतीय बौद्ध महासभा उ0 प्र0 की प्रांतीय साधारण सभा की दो दिवसीय बैठक की हुई शुरुआत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज/अमेठी। भारतीय बौद्ध महासभा उ0 प्र0 की साधारण सभा

के दो दिवसीय साधारण सभा की शुरूआत धर्मोदय बुद्ध विहार पुरनिया नया पुरवा लखनऊ में हुई। कार्यक्रम की शुरूआत पारम्परिक बौद्ध रीति त्रिशरण पंचशील ग्रहण पूर्वक बुद्ध पूजा वंदना से हुई। महासभा के प्रांतीय अध्यक्ष मानसिंह गौतम एडवोकेट के साथ हरिशंकर बौद्ध आदि चार लोगों ने सहभागिता निभाई। इसके बाद विभिन्न बिन्दुओं पर आवश्यक चर्चा परिचर्चा की गयी। इस अवसर पर उपस्थित रहे प्रमुख पदाधिकारियों व सदस्यों में प्रांतीय महामंत्री द्वय डॉ अरविन्द कुमार गौतम, साहब सिंह बौद्ध, प्रांतीय संयुक्त मंत्री महेंद्र सिंह दिनकर, धर्म वीर सिंह अशोक, भीम प्रकाश गौतम, अरुणेन्दु कुमार गौतम, सुखवीर सिंह बौद्ध बी डी संगम, के पी सिंह, गोपी चंद्र निमेष, बुद्ध प्रिय गौतम राधेश्याम प्रदेश उपाध्यक्ष, संघप्रिय गौतम, रमेश कुमार गौतम, जगमोहन मौर्य लखनऊ जिला महामंत्री, नाहर सिंह, जया बौद्ध सुशीला गौतम, आशा गौतम, बलवीर सिंह, सोबरन सिंह, उदयवीर सिंह, शिवदत्त भारती, कैलाश चंद गौतम, गौरीशंकर बौद्ध जिलाध्यक्ष भारतीय बौद्ध महासभा उ0 प्र0 शाखा जनपद अमेठी के पी सविता बौद्ध जिला महामंत्री भारतीय बौद्ध महासभा उ0 प्र0 शाखा जनपद अमेठी आदि रहे।

ज्ञानकुंज एकेडमी ने दिया प्रकृति प्रेम का अनूठा संदेश, एनसीसी कैडेट्स ने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान से जीता सबका दिल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) बंशीबाजार/बलिया। शिक्षा के क्षेत्र में अपनी उत्कृष्ट पहचान बना चुकी

ज्ञानकुंज एकेडमी ने एक बार फिर सामाजिक सरोकार और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का परिचय देते हुए विद्यालय परिसर में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के अंतर्गत भव्य पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर एनसीसी कैडेट्स ने अपनी माताओं के सम्मान में पौधे लगाकर यह संदेश

दिया कि जिस तरह मां जीवन देती है, उसी प्रकार पेड़ भी धरती पर जीवन का आधार हैं। कार्यक्रम के दौरान पूरे विद्यालय परिसर में उत्साह, अनुशासन और प्रकृति के प्रति प्रेम का अनूठा वातावरण देखने को मिला। इस दौरान विद्यालय की प्राचार्या सुधा पाण्डेय ने कहा कि ज्ञानकुंज एकेडमी केवल विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही नहीं देती, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार, संवेदनशील और जागरूक नागरिक बनने की प्रेरणा भी देती है। उन्होंने कहा कि 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान मातृत्व के सम्मान के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का ऐसा संदेश है, जिसे हर परिवार तक पहुंचाने की आवश्यकता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मां के नाम एक पौधा लगाए और उसकी देखभाल का संकल्प ले, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और हरित वातावरण मिल सकेगा। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे पौधे लगाने के साथ-साथ उनकी नियमित देखभाल भी करें, क्योंकि एक पौधा ही भविष्य में हजारों लोगों के जीवन का सहारा बनता है। कार्यक्रम में उपस्थित सीटीओ सागर वर्मा ने कहा कि एनसीसी का उद्देश्य केवल परेड और अनुशासन तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी निभाने की भावना विकसित करना भी है। ऐसे अभियान युवाओं में सेवा, समर्पण और पर्यावरण संरक्षण के संस्कार पैदा करते हैं। जीसीआई खुशी सिंह ने कहा कि प्रकृति की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। आज लगाया गया एक छोटा-सा पौधा आने वाले वर्षों में हजारों लोगों को स्वच्छ हवा, छाया और जीवन देगा। उन्होंने विद्यार्थियों से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उन्हें सुरक्षित रखने का संकल्प लेने का आह्वान किया। इस अवसर पर एनसीसी कैडेट्स ने पूरे उत्साह के साथ पौधरोपण किया और यह संकल्प लिया कि लगाए गए प्रत्येक पौधे की नियमित देखभाल करेंगे। कार्यक्रम ने यह साबित कर दिया कि शिक्षा तभी सार्थक है, जब उसके साथ सामाजिक चेतना और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता भी जुड़ी हो। ज्ञान कुंज एकेडमी ने इस प्रेरणादायी पहल के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों बल्कि पूरे समाज को यह संदेश दिया कि मां के सम्मान और प्रकृति के संरक्षण से बढ़कर कोई सेवा नहीं हो सकती। विद्यालय की इस अनूठी पहल की क्षेत्र में सराहना हो रही है और लोगों ने इसे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक अनुकरणीय प्रयास बताया। इस अवसर पर विद्यालय परिवार, शिक्षक- शिक्षिकाएं, एनसीसी कैडेट्स तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

गीता रघुवंशी को भावभीनी श्रद्धांजलि, नम आंखों से दी अंतिम विदाई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। चेतना मंच के संस्थापक एवं संपादक आर.पी. रघुवंशी के छोटे भाई तथा नोएडा बार एसोसिएशन (डीड राइटर्स एंड एडवोकेट्स) के संरक्षक एवं पूर्व अध्यक्ष चौधरी सचिन कुमार एडवोकेट की धर्मपत्नी स्वर्गीय श्रीमती गीता रघुवंशी के निधन पर शनिवार को सेक्टर-29 स्थित नोएडा मीडिया क्लब में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। शोकसभा में बड़ी संख्या में पत्रकारों, अधिवक्ताओं, समाजसेवियों और विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी तथा दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखकर ईश्वर से प्रार्थना की। सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि गीता रघुवंशी का व्यक्तित्व अत्यंत सरल, सहज और आत्मीय था। उनका निधन न केवल परिवार बल्कि समाज के लिए भी अपूरणीय क्षति है। उपस्थित सभी लोगों ने शोकाकुल परिवार के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें तथा परिवार को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति दे। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में नोएडा मीडिया क्लब के अध्यक्ष आलोक द्विवेदी, सचिव जगदीश शर्मा, नोएडा लोकमंच के महासचिव महेश सक्सेना, वरिष्ठ पत्रकार बृजमोहन शर्मा, पत्रकार अकरम, राजेश शर्मा, सुरेश चौरसिया, समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता राघवेंद्र दुबे, विधानसभा अध्यक्ष बबलू चौहान, दिनेश गौड़, वरिष्ठ पत्रकार सुधाकर द्विवेदी, देवेन्द्र प्रभात, प्रमोद पंडित, संदीप गर्ग ,वरुण श्रीवास्तव,विनय जोशी, किसान नेता अशोक चौहान, ए.के. लाल, शिवकुमार, गिरीश नारायण, मनोहर त्यागी ,नीलम भागी नवरत्न फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार श्रीवास्तव, हरवीर चौहान तथा चेतना मंच समाचार पत्र के प्रबंधक शीशपाल सिंह, अरुण सिन्हा, देवदत्त शर्मा, आनंद मिश्रा, सुभाष भाटी और अंजना भागी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। सभी ने नम आंखों से दिवंगत गीता रघुवंशी को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

शहडोल में 15 जुलाई से चलेगा विशेष नशा विरोधी अभियान,नवागत पुलिस अधीक्षक संजय कुमार अग्रवाल ने गिनाईं प्राथमिकताएं

अपराध नियंत्रण और जनविश्वास पर रहेगा विशेष फोकस

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) म.प्र./शहडोल। शहडोल जिले के नवागत पुलिस अधीक्षक संजय कुमार अग्रवाल ने शनिवार को आयोजित अपनी पहली पत्रकार वार्ता में जिले की पुलिस कार्यप्रणाली और आगामी कार्ययोजना की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि कानून-व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाना, अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करना तथा नशे के विरुद्ध सख्त कार्रवाई उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता रहेगी। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि 15 जुलाई से 30 जुलाई 2026 तक जिले में विशेष नशा विरोधी अभियान संचालित किया जाएगा। अभियान के दौरान अवैध शराब, मादक पदार्थों की तस्करी तथा नशे के कारोबार में संलिप्त व्यक्तियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि सूचना तंत्र को और अधिक मजबूत किया जाएगा। रात्रिकालीन गश्त बढ़ाई जाएगी तथा जिन थानों में पुलिस बल की कमी है, वहां पुलिस लाइन से अतिरिक्त बल उपलब्ध कराया जाएगा, ताकि अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके। पत्रकार वार्ता के दौरान पुलिस अधीक्षक ने कहा कि बेहतर पुलिसिंग केवल पुलिस के प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि इसमें मीडिया और आमजन की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने पुलिस और मीडिया के बीच बेहतर समन्वय पर बल देते हुए कहा कि दोनों का उद्देश्य समाज में पारदर्शिता बनाए रखना, कानून का पालन सुनिश्चित करना तथा आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

रक्त दान शिविर अन्हा ब्लड बैंक, प्रयागराज मे शनिवार को सम्पन्न हुआ

प्रयागराज। बीते दिन प्रयागराज लायंस का पहला रक्त दान शिविर अन्हा ब्लड बैंक, प्रयागराज मे शनिवार को सम्पन्न हुआ, जिसका उध्घाटन डीजी लायन उदय उदय चंदानी और वीडीजी-1 (इलेक्ट) लायन उमेश चंद्र कक्कड़ द्वारा किया, जिसमे कुल 31 यूनिट रक्त दान प्राप्त हुवा। लायन क्लब के सदस्यो ने रक्त दान टीम का सहयोग किया। इस मानवीय कार्य के लिए जगदीश गुलाटी , सुदर्शन मेहरोत्रा, कुंवर बी एम सिंह, जगमोहन अग्रवाल, हिमांशु गुप्ता, सतीश टंडन, मनीष कोहली, आर बी सिंह, राजेंद्र जयसवाल, मोना गुप्ता, आरती सक्सेना, अमित गुप्ता, हूं वर्मा इत्यादि उपस्थित रहे। लायन पंकज माहेश्वरी द्वारा आज अपना 89 वा रक्तदान किया गया, व नौजवान हर्ष अग्रवाल, अखिलेश कुमार सिंह, आपर्ष अग्रवाल, अर्णब कुमार घोष द्वारा भी रक्तदान किया गया। मंडल की तरफ से सभी रक्त दनियों को, स्नैक्स बॉक्स, अप्रिशिएशन सर्टिफिकेट, व रक्त डोनर पिन द्वारा सम्मानित किया गया। रक्त दान टीम सभी रक्त दानियों को ढेर सारी शुभकामनाएं देती है, एवम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आप सभी औरों को भी मोटिवेट करें, ताकि एक नया कीर्तिमान स्थापित किया जा सके।

डीएम-एसपी ने तहसील लालगंज में सम्पूर्ण समाधान दिवस में फरियादियों की सुनी समस्याएं

शिकायतों का समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण से निस्तारण कराए अधिकारी - डीएम,सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 148 शिकायतें आयी, 20 का तत्काल हुआ निस्तारण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सोमवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में तहसील लालगंज में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि जन सामान्य की शिकायतों का स्थानीय स्तर पर समाधान किया जाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है जिसके क्रम में तहसील व थानों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया जाता है। इसमें स्थानीय नागरिक उपस्थित होकर अपनी समस्याओं का समाधान करा सकते है। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी अधिकारी जनता की इन शिकायतों का निस्तारण त्वरित एवं समयबद्ध तरीके से एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में यदि कोई समस्या है तो उसका कारण स्पष्ट करते हुए अवगत कराना सुनिश्चित किया जाये। जिलाधिकारी ने बताया कि तहसील लालगंज में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में राजस्व विभाग 57, पुलिस 41, विकास 09, समाज कल्याण 03 एवं अन्य 38 कुल 148 प्रकरण प्राप्त हुए, जिसमें से 20 प्रकरणों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। शेष प्रकरणों के निस्तारण हेतु संबंधित विभागों को इस निर्देश के साथ उपलब्ध करा दिये गये कि उनका निस्तारण एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित कराए। पुलिस अधीक्षक रवि कुमार ने भी पुलिस से संबंधित मामलों को सुना और संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 नवीन चन्द्रा, उप जिलाधिकारी लालगंज राजेश श्रीवास्तव, क्षेत्राधिकारी लालगंज सुजीत कुमार राय सहित संबंधित जिला स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

हज-2026 के यात्री 13 जुलाई तक हवाई किराये की शेष धनराशि अनिवार्य रूप से जमा करें

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी महिमा ने बताया कि हज कमेटी ऑफ इंडिया, मुंबई द्वारा जारी सर्कुलर संख्या-42 दिनांक 03 जुलाई, 2026 के अनुसार हज-2026 के हज यात्रियों को पूर्व में जारी सर्कुलर संख्या-39 दिनांक 28 अप्रैल, 2026 के क्रम में मध्य-पूर्व में उत्पन्न असाधारण परिस्थितियों के दृष्टिगत अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हवाई किराये में संशोधन किया गया था। इसके तहत प्रत्येक हज यात्री को हवाई किराये की अंतर राशि 10,000 रुपये 15 मई, 2026 तक जमा करने के निर्देश दिए गए थे। उन्होंने बताया कि हज-2026 की वापसी उड़ानें अब पूरी हो चुकी हैं, लेकिन अभी भी अनेक हज यात्रियों द्वारा हवाई किराये की शेष धनराशि जमा नहीं की गई है। ऐसे सभी यात्रियों को निर्देशित किया गया है कि वे प्रत्येक दशा में 13 जुलाई, 2026 तक पे-इन-स्लिप के माध्यम से स्टेट बैंक ऑफ इंडिया अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा में हज कमेटी ऑफ इंडिया के बैंक खाते में अपना बैंक रेफरेंस नंबर अंकित करते हुए शेष धनराशि अनिवार्य रूप से जमा करा दें। उन्होंने बताया कि बैंक रेफरेंस नंबर हज कमेटी ऑफ इंडिया की वेबसाइट https://hajcommittee.gov.in पर उपलब्ध है।

मा0 विधायक अशोक कुमार ने पीड़ित परिवार को प्रदान की आर्थिक सहायता

आश्रितों को आवासीय व कृषि पट्टा, बच्चों की शिक्षा, पेंशन एवं आर्थिक सहायता का मिला लाभ,सरकार पूरी संवेदनशीलता के साथ पीड़ित परिवार के साथ खड़ी- अशोक कुमार, परिवार को हर सम्भव मदद करायी जाएगी उपलब्ध-मा0 विधायक, पीड़ित परिवार ने मा0 मुख्यमंत्री जी के प्रति व्यक्त किया आभार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मा0 विधायक सलोन अशोक कुमार ने आज तहसील सलोन के ग्राम खम्हरिया पूरे कुशल पहुंचकर सड़क दुर्घटना में मृतक स्वर्गीय मेवालाल पुत्र झुरई के शोकाकुल परिवार से मुलाकात की। उन्होंने परिजनों को ढांढस बंधाते हुए शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के अंतर्गत अनुमन्य सहायता प्रदान की तथा भरोसा दिलाया कि सरकार इस संकट की घड़ी में पीड़ित परिवार के साथ मजबूती से खड़ी है। उल्लेखनीय है कि ग्राम खम्हरिया पूरे कुशल निवासी स्वर्गीय मेवालाल की वाहन दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल होने के बाद केजीएमयू, लखनऊ में उपचार के दौरान दिनांक 29 जून 2026 को मृत्यु हो गई थी। घटना के उपरांत जिला प्रशासन द्वारा तत्काल कार्रवाई करते हुए पात्रता के अनुसार विभिन्न योजनाओं से परिवार को लाभान्वित करने की प्रक्रिया प्रारंभ की गई। इस अवसर पर मृतक की माँ सिरताजा को शासन द्वारा अनुमन्य विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत सहायता उपलब्ध कराई गई, जिसमें 0.013 हेक्टेयर आवासीय पट्टा तथा 0.312 हेक्टेयर कृषि पट्टा प्रदान किया गया। साथ ही मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना के अंतर्गत परिवार के दो बच्चों की शिक्षा हेतु रु2,500-रु2,500 प्रतिमाह की सहायता के स्वीकृति प्रमाण पत्र दिए गए, इसके अतिरिक्त निराश्रित महिला पेंशन योजना के अंतर्गत मृतक की पत्नी राजरानी को रु1,000 प्रतिमाह पेंशन का स्वीकृति प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना के अंतर्गत रु30,000 की आर्थिक सहायता भी उपलब्ध कराई गई। वहीं मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना के अंतर्गत रु5 लाख की आर्थिक सहायता प्रदान किए जाने की कार्यवाही प्रचलित है, जिसे शीघ्र पूर्ण कराया जाएगा। मा0 विधायक ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार पूरी संवेदनशीलता के साथ पीड़ित परिवार के साथ खड़ी है, परिवार को हर सम्भव मदद शासन/ प्रशासन द्वारा की जाएगी। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी सलोन मिथिलेश कुमार त्रिपाठी, क्षेत्राधिकारी प्रदीप कुमार सहित जनप्रतिनिधिगण, संबंधित अधिकारी व क्षेत्रीय निवासी उपस्थित रहें।

बेथनी कॉन्वेंट स्कूल, नैनी में 'प्रिंसिपल-पेरेंट्स मीटिंग' का आयोजन, नई प्राचार्या सिस्टर डॉ. अनीता मोरास की पहल को मिला अभिभावकों का भरपूर समर्थन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। नैनी स्थित बेथनी कॉन्वेंट स्कूल में आज कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थियों के अभिभावकों के लिए प्रिंसिपल-पेरेंट्स मीटिंग (Principal Parents Meeting - PPM) का आयोजन किया गया। विद्यालय की नई प्राचार्या सिस्टर डॉ. अनीता मोरास की पहल पर आयोजित इस विशेष संवाद कार्यक्रम में बड़ी संख्या में अभिभावकों ने भाग लिया और इसे विद्यालय एवं विद्यार्थियों के हित में एक अत्यंत सराहनीय कदम बताया। बैठक का उद्देश्य अभिभावकों और प्राचार्या के बीच सीधा संवाद स्थापित करना, विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन, अनुशासन, व्यक्तित्व विकास तथा करियर मार्गदर्शन पर विचार-विमर्श करना था। कार्यक्रम के दौरान अभिभावकों ने नई प्राचार्या द्वारा शुरू की गई इस अभिनव पहल की खुले दिल से प्रशंसा की और कहा कि इससे विद्यालय एवं परिवार के बीच बेहतर समन्वय स्थापित होगा। अपने संबोधन में प्राचार्या सिस्टर डॉ. अनीता मोरास ने वर्तमान समय में बच्चों द्वारा मोबाइल फोन के अत्यधिक उपयोग पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इसका असर उनकी सोचने-समझने की क्षमता, एकाग्रता और सीखने की प्रक्रिया पर पड़ रहा है। उन्होंने अभिभावकों से आग्रह किया कि वे बच्चों के स्क्रीन टाइम पर नियंत्रण रखें और उन्हें पुस्तकों के अध्ययन, खेलकूद तथा रचनात्मक गतिविधियों के लिए प्रेरित करें। उन्होंने अभिभावकों से यह भी अपील की कि बच्चों को घर के छोटे-छोटे कार्यों, जैसे भोजन के बाद अपनी प्लेट स्वयं साफ करना, अपने कपड़े व्यवस्थित रखना तथा घर की जिम्मेदारियों में सहयोग करना सिखाएँ। उन्होंने कहा कि ऐसी आदतें बच्चों में आत्मनिर्भरता, अनुशासन, जिम्मेदारी और अच्छे संस्कार विकसित करती हैं। बैठक के दौरान विद्यार्थियों के करियर, अनुशासन और नैतिक मूल्यों पर भी विस्तार से चर्चा की गई। अभिभावकों ने शिक्षकों से अपने बच्चों की शैक्षणिक प्रगति एवं व्यवहार के संबंध में व्यक्तिगत रूप से बातचीत की तथा विद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। अंत में अभिभावकों ने नई प्राचार्या सिस्टर डॉ. अनीता मोरास के नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रकार की नियमित प्रिंसिपल-पेरेंट्स मीटिंग विद्यालय की निरंतर प्रगति तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

6 से 20 जुलाई तक निःशुल्क खाद्यान्न व अंत्योदय कार्डधारकों को सःशुल्क चीनी का होगा वितरण, डीएम के निर्देश पर पारदर्शी वितरण के लिए नोडल अधिकारी तैनात, कालाबाजारी पर होगी सख्त कार्रवाई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका के आदेशानुसार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-2013 के अंतर्गत जनपद में माह जुलाई 2026 का खाद्यान्न वितरण 6 जुलाई से 20 जुलाई 2026 तक किया जाएगा। इस दौरान अंत्योदय एवं पात्र गृहस्थी राशन कार्डधारकों को गेहूं एवं चावल का निःशुल्क वितरण किया जाएगा। वहीं अंत्योदय कार्डधारकों को अप्रैल, मई एवं जून 2026 तिमाही के सापेक्ष 3 किलोग्राम चीनी 18 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से 54 रुपये प्रति कार्ड में उपलब्ध कराई जाएगी। अंत्योदय कार्डधारकों को प्रति कार्ड 14 किलोग्राम गेहूं एवं 21 किलोग्राम फोर्टिफाइड चावल (कुल 35 किलोग्राम) तथा पात्र गृहस्थी कार्डधारकों को प्रति यूनिट 2 किलोग्राम गेहूं एवं 3 किलोग्राम फोर्टिफाइड चावल (कुल 5 किलोग्राम) निःशुल्क वितरित किया जाएगा। वितरण ई-वेइंग लिंक्ड ई-पॉस मशीनों के माध्यम से किया जाएगा तथा खाद्यान्न का मूल्य वितरण पर्ची पर शून्य अंकित रहेगा। अंत्योदय कार्डधारकों के लिए चीनी वितरण में पोर्टेबिलिटी की सुविधा उपलब्ध नहीं होगी और उन्हें अपनी मूल उचित दर दुकान से ही चीनी प्राप्त करनी होगी। जिलाधिकारी ने वितरण व्यवस्था को पूरी तरह पारदर्शी एवं व्यवस्थित बनाए रखने के लिए प्रत्येक उचित दर दुकान पर नोडल एवं पर्यवेक्षणीय अधिकारियों की तैनाती के निर्देश दिए हैं। वितरण से पूर्व खाद्यान्न एवं चीनी का भौतिक सत्यापन कराया जाएगा तथा सभी अधिकारी नियमित निरीक्षण करेंगे। किसी भी प्रकार की गड़बड़ी, घटतौली, कालाबाजारी अथवा खाद्यान्न के दुरुपयोग की शिकायत मिलने पर संबंधित उचित दर विक्रेता के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। साथ ही यह सुनिश्चित किया जाएगा कि कोई भी पात्र लाभार्थी निर्धारित अवधि में खाद्यान्न प्राप्त करने से वंचित न रहे।

अरेंज्ड मैरिज की व्यवस्था को एक 'अपग्रेड' की जरूरत है

पीढ़ियों से भारतीय माता-पिता अपनी बेटियों से कहते आए हैं कि मन लगाकर पढ़ो, बड़े सपने देखो, जीवन में कुछ बनो। लेकिन विवाह अनुपालन को सहमति और कर्तव्य को इच्छा समझने की भूल करता है। बीते कुछ दशकों में भारत में व्यापक बदलाव आया है। महिलाएं क्या होता है? ऐसा जीवन जीने के भावनात्मक परिणाम क्या होते हैं, जिसकी रूपरेखा मुख्य रूप से परिवार की अपेक्षाओं को पूरा करने कि हमने विवाह संस्था को छोड़कर लगभग हर चीज का आधुनिकीकरण कर लिया है। लेकिन विवाह आज्ञाकारिता का

की उम्र आते-आते यह संदेश बदल जाता है। इसके बाद वे अचानक उनसे यह अपेक्षा करने लगते हैं कि समझौता करना सीखो! मैंने तो इस पटकथा को कई बार घटित होते देखा है। डॉक्टर, आंत्रप्रेन्योर, कलाकार, एकेडमिक बनने का सपना देखने वाली जाने कितनी ही प्रतिभाशाली लड़कियां कॉलेज के बाद- और कई बार तो पढ़ाई पूरी होने से पहले ही अचानक ओझल हो जातीं। उनका विवाह हो जाता। करियर उनके लिए एक जरूरी विकल्प नहीं रह पाता। आर्थिक आत्मनिर्भरता गैर-जरूरी समझी जाने लगती। उनकी तमाम महत्वाकांक्षाओं को समेटकर एक डिजाइनर लहंगे में रख दिया जाता! उनकी पहचान तीन शब्दों तक सिमटकर रह जाती- पत्नी, मां और बहू। यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि यह अरेंज्ड मैरिज के खिलाफ कोई दलील नहीं है। ऐसे लाखों विवाह आज सुखी, स्नेहपूर्ण और सफल हैं। लेकिन यहां हम अरेंज्ड मैरिज के उस स्वरूप के खिलाफ बात कर रहे हैं, जो आज्ञाकारिता को सद्गुण, विश्वविद्यालयों की मेरिट सूची में शीर्ष स्थान हासिल कर रही हैं, कंपनियों का नेतृत्व कर रही हैं, लड़ाकू विमान दस्तों की कमान संभाल रही हैं, यूनिकॉर्न कंपनियां खड़ी कर रही हैं और उच्चतम न्यायालय में प्रभावी पैरवी कर रही हैं। हम उन पर महत्वपूर्ण फैसलों को लेकर भरोसा करते हैं, लेकिन जीवनसाथी चुनने का निर्णय लेने का भरोसा अब भी नहीं करते।सवाल आज भी वही हैं : लोग क्या कहेंगे? क्या लड़का सही समुदाय से है? क्या लड़की एडजस्ट कर पाएगी? हम कितनी बार किसी लड़की से यह पूछते हैं कि उसकी खुद की इच्छा क्या है? हाल ही के सिया गोयल के मामले को ही लें। सिया के अपराध का किसी भी तरह से बचाव नहीं किया जा सकता, लेकिन इस घटना ने हममें से कई लोगों को कुछ असहज करने वाले सवालों का सामना करने के लिए मजबूर किया है। वो यह है कि जब महिलाओं को महसूस होता है कि उनके जीवन के सबसे बड़े निर्णयों में से एक पर उनका अधिकार नहीं है, तब के लिए तैयार की गई हो? हम इन सवालों को किसी त्रासदी के घटित होने के बाद पूछने का जोखिम नहीं उठा सकते। हमें इन्हें विवाह तय होने से पहले ही पूछना होगा। क्योंकि अब हम ऐसी पीढ़ी की महिलाओं को देख रहे हैं, जिनके लिए सहमति का अर्थ केवल विवाह के दिन 'हां' कहना नहीं है। उनके लिए सहमति का अर्थ है भावनात्मक दबाव, सामाजिक बहिष्कार या आजीवन अपराध-बोध के बिना 'ना' कहने की स्वतंत्रता होना। यह तय करने की स्वतंत्रता होना कि विवाह करना है या नहीं, कब करना है और किससे करना है। और हां, ये कोई पश्चिमी विचार नहीं हैं, ये मानवीय विचार हैं! विडम्बना यह है कि हम अपनी बेटियों की शिक्षा पर वर्षों तक निवेश करते हैं, उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने, बड़े स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। लेकिन जैसे ही विवाह की बात आती है, स्वतंत्र सोच अचानक विद्रोह मानी जाने लगती है। समस्या स्वयं अरेंज्ड मैरिज में नहीं है। समस्या इस तथ्य में है पुरस्कार नहीं होना चाहिए। वह एक स्वतंत्र निर्णय का परिणाम होना चाहिए। परिवार अब भी होने वाले जीवनसाथियों का आपस में परिचय करा सकते हैं। समाज अब भी अपनी परम्पराओं का उत्सव मना सकता है। संस्कृति अब भी कायम रह सकती है। लेकिन जब कोई परम्परा व्यक्ति की स्वतंत्रता को समृद्ध करने के बजाय उसका दमन करने लगे, तो उसमें बदलाव जरूरी हो जाता है।

सबसे मजबूत रिश्ते वो नहीं होते, जो पारिवारिक दबाव या सामाजिक जिम्मेदारी पर टिके हों। वे वो होते हैं, जो दो लोगों के एक-दूसरे को स्वतंत्र रूप से चुनने पर आधारित होते हैं। समस्या स्वयं अरेंज्ड मैरिज में नहीं है। समस्या इस तथ्य में है कि हमने विवाह संस्था को छोड़कर लगभग हर चीज का आधुनिकीकरण कर लिया है। लेकिन विवाह को आज्ञाकारिता का पुरस्कार मात्र नहीं होना चाहिए। वह एक व्यक्ति के स्वतंत्र निर्णय का परिणाम होना चाहिए। (ये लेखिका के अपने विचार हैं,मेघना पंत)

लोगों के दिमाग में आप कैसे 'अनफॉर्गेटेबल' बन सकते हैं?

रामायण में वर्णित निषादराज गुह से कौन-कौन प्रेरणा ले सकता है, जिन्होंने बिना किसी अपेक्षा के लोगों को नदी पार कराई? पर उपलब्ध सामग्री, सामुदायिक भागीदारी और सरल इंजीनियरिंग सिद्धांतों का इस्तेमाल करके उन्होंने कम खर्च में ही पुल बना दिया। ये और बेहतर जीवन का अनुभव करते हैं, क्योंकि एक इंजीनियर ने परिवहन समस्या के समाधान पर ध्यान दिया। ऐसे लोगों की सूची आजीविका को तबाह कर रही है। केवल बड़े बांधों पर निर्भर रहने के बजाय उन्होंने पारंपरिक जल संरक्षण तकनीकों को पुनर्जीवित

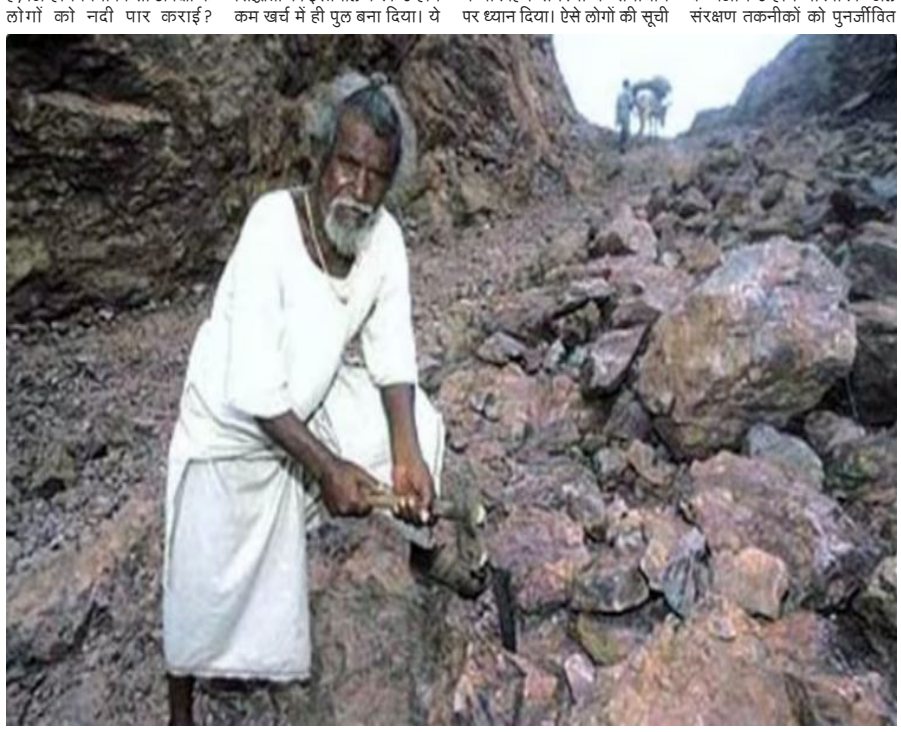

आधुनिक दौर में जरूरी नहीं कि कोई गुह जैसा नाविक ही बने। वे पुल भी बना सकते हैं। यदि वे ऐसा करते हैं तो लोगों को नदी के एक किनारे से दूसरे तक ही नहीं पहुंचाते, बल्कि किसान की पैदावार को भी नजदीकी बाजार तक पहुंचाते हैं, ताकि वह परिवार को सहयोग कर सके, कोई छात्र अगले गांव के स्कूल जा सके और किसी प्रेग्नेंट महिला को बेहतर मेडिकल केयर मिल सके। यही काम पद्मश्री गिरीश भारद्वाज ने किया था। 1989 में बेंगलुरु से 300 किमी दूर उनके जन्मस्थान अलेड्डी गांव के लोग उनके पास आए और अगले गांव तक पुल बनाने का अनोखा-सा अनुरोध किया। बचपन में भारद्वाज को सीधे पांचवीं कक्षा में एडमिशन लेना पड़ा था, क्योंकि कोई बच्चा इतना लंबा पैदल चल कर नदी पार नहीं कर सकता था। संभवतः उन्हें गुह की याद भी आई होगी। भारद्वाज ने कहा, 'मैंने कभी पुल नहीं बनाया।' फिर भी ग्रामीण बोले कि 'आप इंजीनियर हैं, हल निकाल लेंगे।' और तब उन्होंने चुनौती स्वीकार ली। स्थानीय स्तर खबर नदी से भी तेज गति से फैली। जल्द ही देशभर से सरकारें और समुदाय उन्हें बुलाने लगे। भारत के 'ब्रिज मैन' नाम से मशहूर भारद्वाज का इस मंगलवार को 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया। लेकिन ग्रामीण भारत में उनके बनाए 140 से अधिक सस्पेंशन पुल आज भी इंजीनियरिंग से अधिक बड़ी कहानी सुनाते हैं। वे याद दिलाते हैं कि जब आप किसी व्यापक समस्या को हल करते हैं तो पहचान अपने-आप पीछे आती है। भारत का इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। ई. श्रीधरन को लें, जिन्होंने लाखों लोगों को वह चीज दी, जो सबसे ताकतवर लोग भी नहीं दे सकते- समय। उन्होंने समझा कि भारत के तेजी से बढ़ते शहरों को शानदार इंफ्रास्ट्रक्चर से ज्यादा कुशल सार्वजनिक परिवहन की जरूरत है। कोंकण रेलवे और दिल्ली मेट्रो जैसी परियोजनाओं को असाधारण गति और ईमानदारी के साथ पूरा करके उन्होंने शहरी यातायात की तस्वीर बदल दी। आज लाखों लोग ट्रैफिक में कम फंसते हैं, सुरक्षित यात्रा करते हैं बहुत लंबी है। डॉ. वर्गीज कुरियन ने दुग्ध क्रांति का जनक बनने का लक्ष्य नहीं रखा था। उन्होंने महज ग्रामीण भारत की एक बड़ी समस्या का समाधान किया कि डेयरी किसानों को उपज का उचित मूल्य मिले। लाखों लोगों को इसका लाभ मिला और सम्मान अपने-आप मिला। डॉ. बिंदेश्वर पाठक पुरस्कारों के पीछे नहीं दौड़े। उन्होंने सुलभ शौचालयों के जरिए स्वच्छता संकट का समाधान किया। लाखों लोगों को सम्मानजनक जीवन दिया और सार्वजनिक स्वच्छता के प्रति देश की सोच बदली। अरुणाचलम मुरुगनाथम ने भी कभी नहीं सोचा कि उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिलेगी। उन्होंने एक उपेक्षित समस्या पर ध्यान दिया- ग्रामीण महिलाओं को सस्ते सैनिटरी पैड उपलब्ध कराना। उनके नवाचार ने अनगिनत परिवारों के स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका को बदल दिया।और इस सूची में राजेंद्र सिंह भी हैं, जिन्हें भारत का वाटरमैन कहते हैं। उन्होंने समझा कि पानी की किल्लत गांवों और लोगों की किया और नदियों व भूजलस्तर को बहाल करने के लिए समुदायों को एकजुट किया।उनके प्रयासों ने राजस्थान के हजारों गांवों में नई जान फूंक दी। उन्होंने साबित किया कि जब स्थानीय लोग पर्यावरणीय चुनौतियों को हल करने में साझेदार बन जाएं तो टिकाऊ विकास सफल होता है। इन सभी उदाहरणों में एक सिद्धांत समान दिखाई देता है- लाखों लोगों को प्रभावित करने वाली समस्या को पहचानो और समाधान के लिए खुद को समर्पित कर दो। जब कोई टीचर बच्चों को शिक्षा से, कोई डॉक्टर गांव को हेल्थकेयर से, कोई आंत्रप्रेन्योर किसानों को बाजार से, कोई इंजीनियर तकनीक को आमजन से, या कोई व्यक्ति उम्मीद को अवसर से जोड़ता है तो दुनिया हमेशा याद रखती है कि किसने सबसे ज्यादा लोगों के जीवन को बेहतर बनाया। फंडा यह है कि जब कोई व्यक्ति कोई बेहद जरूरी पुल बनाता है तो लोग उसके पेशे को भले भूल जाएं, लेकिन उसे बहुत लंबे समय तक याद रखते हैं। एन. रघुरामन

भविष्य में 'वीकेंड इकॉनमी' लोगों का अधिक ध्यान खींच सकती है

मैं ऐसे शेफ को जानता हूं, जो सोमवार और मंगलवार को घर ही रहते हैं। बुधवार को दिन में अलग-अलग जगह जाकर रिसर्च करते हैं और शाम को रेस्तरां पहुंचते हैं, ताकि हफ्ते के बीच आने वाले ग्राहकों को सेवा दे सकें। फिर गुरुवार से रविवार तक देर रात तक काम करते हैं। मुंबई में लंबे के आस-पास के दिनों में ज्यादा खर्च करते हैं। इसी सप्ताह डेटा आउटफिट 'प्राइस' और टाटा संस की ओर से देश के शीर्ष 100 शहरों में उपभोग पैटर्न पर एक अध्ययन में यही बात सामने आई है। इसके अनुसार शहरी उपभोक्ताओं के साप्ताहिक खर्च का दो-तिहाई हिस्सा शनिवार और रविवार को कोलकाता, बेंगलुरु, चेन्नई और हैदराबाद- में ज्यादा स्पष्ट है। बाकी 94 शहर भी बहुत पीछे नहीं हैं। सिर्फ धनबाद जैसे कुछ शहरों में यह स्तर थोड़ा कम है। लंबे समय से जैविक खेती करने वाले किसान न सिर्फ मुंबई और बेंगलुरु जैसे टियर-1 शहरों में, बल्कि इंदौर और जयपुर जैसे टियर-2 जापान और यूरोप जैसे विकसित देशों में भी कई स्वतंत्र बुटीक, फैशन, एंटीक या क्राफ्ट स्टोर केवल गुरुवार से रविवार तक ही खुलते हैं। इनके मालिक दैनिक ग्राहकों के बजाय अपॉइंटमेंट, ऑनलाइन सेल्स या अधिक मार्जिन वाले कारोबार में भरोसा करते हैं। मैंने केरल जैसे राज्यों की खासियत के कारण हो, जैसे म्यूजियम। हो सकता है परिसर खुद का हो और कर्मचारी परिवार के सदस्य हों, जो तीन दिन काम करके कमाई करते हैं और बाकी चार दिन जीवन का आनंद लेते हैं। जो लोग किराए के परिसर में कारोबार कर रहे हैं, संभवतः वे इसे ओम्नी-चैनल रिटेल के तौर हो। इस मॉडल से जिन कारोबारों को फायदा हो सकता है, उनमें लग्जरी बुटीक, हस्तनिर्मित उत्पाद, डिजाइनर फर्नीचर, आर्ट एंड कलेक्टिबल्स, स्पेशियल्टी फूड और विंटेज क्लोदिंग शामिल हैं। भविष्य के ऐसे वीकेंड स्टोर 'डेस्टिनेशन शॉपिंग' के लिए उपयुक्त हो सकते हैं, जो सोमवार से गुरुवार तक ऑनलाइन ऑर्डर लें और इस दौरान स्टाफ को इन्वेंट्री, प्रोडक्शन और ऑनलाइन ग्राहकों से जुड़ने के लिए इस्तेमाल करें। शुक्रवार, शनिवार और रविवार को खुलने के कारण ऐसे कारोबारों में श्रम लागत कम हो सकती है और वे अधिकतर डिमांड को भी पूरा कर सकते हैं। कुछ तो अपने सीमित समय तक खुले रहने को ही एक्सक्लूसिव ब्रांड एक्सपीरियंस के रूप में प्रचारित करते हैं। यदि आप फूड बिजनेस में उतरना चाहते हैं तो वीकेंड वेंचर शुरू कर कम से कम निवेश में बाजार को परख सकते हैं। फंडा यह है कि वर्क-लाइफ बैलेंस चाहने वाले हाइली-प्रोडक्टिव कर्मचारियों की कमी और वीकेंड पर होने वाले मनमर्जी के खर्च को देखते हुए कई आंत्रप्रेन्योर 'वीकेंड इकॉनमी' पर विचार कर सकते हैं। कुछ रिटेल कारोबारों में तो यह भविष्य का ट्रेंड बन सकता है। एन. रघुरामन

समय से साउथ मुंबई के रेस्तरां और दादर जैसे इलाकों के छोटे आउटलेट्स हफ्ते में केवल चार रात ही खुलते हैं। इससे ग्राहकों में उत्सुकता और मांग हमेशा आपूर्ति से ज्यादा बनी रहती है। ऐसा इसलिए, क्योंकि आंत्रप्रेन्योर्स ने मुंबईकरों का खरीदारी ट्रेंड भांप लिया है, जो वीकेंड पर या वीकेंड व्यय होता है। किराना और हेल्थकेयर जैसी जरूरी चीजों पर खर्च पूरे सप्ताह समान रहता है, लेकिन फैशन खर्च में स्पष्ट उछाल दिखता है। यह खर्च अन्य दिनों के औसत 529 रुपए से बढ़कर वीकेंड पर औसत 1075 रुपए तक पहुंच जाता है। यह रुझान देश के छह बड़े महानगरों- दिल्ली, मुंबई, शहरों में भी यह काम बहुत अच्छे ढंग से कर रहे हैं। कई किसान केवल रविवार को कारोबार करते हैं, क्योंकि कॉर्पोरेट कर्मचारी अगले कुछ दिनों के लिए ताजा सब्जियों का स्टॉक फ्रिज में रखते हैं। ये किसान एक साथ, एक ही जगह जाकर अपनी साप्ताहिक उपज बेचते हैं। अमेरिका, कनाडा, में कुछ प्राइवेट म्यूजियम देखे हैं, जो जनता के लिए केवल वीकेंड पर और अन्य दिनों में रिक्वेस्ट पर ही खोले जाते हैं। सोच रहे होंगे कि जब किराया और वेतन जैसे फिक्स खर्चे समान रहते हैं तो फिर ये व्यवसाय चार दिन ही क्यों खुलते हैं? इसके कई कारण हैं। हो सकता है यह उस जगह पर चला रहे हों, जहां वे फिजिकल शॉप के साथ ऑनलाइन बिक्री और 'क्लिक-एंड-कलेक्ट' जैसे ऑफर्स का मिश्रण करते हों। क्या भविष्य में थ्री-डे रिटेल मॉडल आम हो सकता है? कई कॉलेज अपने कोर्सेज में आंत्रप्रेन्योरशिप को बढ़ावा दे रहे हैं तो हो सकता चुनिंदा सेक्टरों में अगले कुछ वर्षों में ऐसा

आज के भारत पर एकतरफा समझ कारगर नहीं हो सकती

पिछले महीने नरेंद्र मोदी देश के सबसे लंबे समय तक लगातार पद पर रहने वाले निर्वाचित प्रधानमंत्री बन गए थे। उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम के नायक जवाहरलाल नेहरू को पीछे छोड़ा, जिन्होंने पहले आम चुनाव के बाद 4,398 दिन पद पर कार्य किया था।

हालांकि नेहरू ने उससे पहले भी पांच साल तक भारत का नेतृत्व किया था और इंदिरा गांधी भी कुल मिलाकर अधिक समय तक प्रधानमंत्री पद पर रहीं, लेकिन लगातार नहीं। मोदी निःसंदेह स्वतंत्र-भारत के तीन सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक के रूप में उनकी श्रेणी में आते हैं। मोदी पहले ही 1947 के बाद भारत के सबसे गहरे 'री-अलाइनमेंट' का नेतृत्व कर चुके हैं, जिसके चलते हमने आर्थिक आधुनिकीकरण और विकास में चकाचौंध कर देने वाली प्रगति देखी है। हालांकि संस्थाओं की स्वतंत्रता और अल्पसंख्यकों के संरक्षण के प्रश्न पर हमने चुनौतियों का भी सामना किया है। मोदी की सबसे बड़ी उपलब्धि अत्याधुनिक तकनीकी और बुनियादी ढांचे का निर्माण रही है, जिसने 1.4 अरब से अधिक लोगों के जीवन को मौलिक रूप से बदल दिया है। 2014 में मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पहले करोड़ों भारतीय औपचारिक बैंकिंग क्षेत्र से बाहर थे। अनौपचारिक विकल्पों पर उनकी निर्भरता ने भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया था। अपने पूर्ववर्ती मनमोहन सिंह द्वारा शुरू की गई पहल पर आगे बढ़ते हुए, मोदी एक नई प्रणाली को अमल में लाए, जिसने पारंपरिक बैंकिंग संरचनाओं को दरकिनार कर दिया। इसके बजाय जीरो-बैलेंस बैंक खातों (जन धन योजना), बायोमेट्रिक पहचान पत्रों (आधार) और मोबाइल नंबरों को जोड़ दिया गया।इस 'जेएएम' त्रिमूर्ति ने ही यूपीआई को जन्म दिया है, जो एक सार्वजनिक, रीयल-टाइम भुगतान प्रोटोकॉल है और सड़क किनारे बैठे विक्रेताओं से लेकर तकनीकी दिग्गजों तक सभी को तुरंत लेनदेन में सक्षम बनाता है। इस दृष्टिकोण ने डायरेक्ट बेनेफिट ट्रांसफर (डीबीटी) प्रणाली का भी विस्तार संभव बनाया, जिसके तहत सब्सिडी और लाभ सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में जमा किए जाते हैं। 2013 में शुरुआत के बाद से ही डीबीटी ने अन्य कल्याणकारी योजनाओं के साथ मिलकर तकरीबन 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में मदद की है। मध्यस्थों को बीच में से हटाकर इस प्रणाली ने भ्रष्टाचार पर भी अंकुश लगाया है। हालांकि अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्र अभी भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं हैं। बुनियादी ढांचे के विकास के लिए भी युद्ध-स्तर की तत्परता दिखाई गई है और राजमार्गों, हवाई अड्डों और हाई-स्पीड रेल नेटवर्क में रिकॉर्ड-तोड़ निवेश हुआ है। बंदरगाहों का आधुनिकीकरण और विस्तार किया जा रहा है। गांवों में बिजली पहुंचाई जा चुकी है। 10 करोड़ से अधिक घरों में- जो पहले सामुदायिक कुंओं पर निर्भर थे- पाइप के जरिए स्वच्छ पानी पहुंचाया गया है। लेकिन विदेश नीति में मोदी ने नेहरू का ही अनुसरण किया है। वैश्विक भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता में पक्षपातपूर्ण रुख अपनाने के बजाय उन्होंने रणनीतिक स्वायत्तता के प्रति भारत की लंबे समय से चली आ रही प्रतिबद्धता को बनाए रखा है और 'मल्टी-अलाइनमेंट' के सिद्धांत को आगे बढ़ाया है। अलबत्ता गलतियां भी हुई हैं। उदाहरण के लिए, भारत को ईरान युद्ध में खुद को एक तटस्थ पक्ष और संभावित मध्यस्थ के रूप में स्थापित करना चाहिए था, न कि यह धारणा बनने देनी चाहिए थी कि वह अमेरिका और इजराइल के पक्ष में है।

आईएनएस महेंद्रगिरि नौसेना में शामिल स्वदेशी मिसाइल-सेंसर से लैस 75फीसदी से ज्यादा हिस्सा भारत में बना, रक्षामंत्री बोले- आंध्रप्रदेश देश का ड्रोन हब बनेगा

विशाखापत्तनम। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम नेवल डॉकयार्ड में आईएनएस महेंद्रगिरि को भारतीय नौसेना में शामिल (कमीशन) किया। महेंद्रगिरि प्रोजेक्ट-17 की नीलगिरि कैटेगरी का छठा स्टेल्थ फ्रिगेट (युद्धपोत) है। इसे बनाने में 75फीसदी से ज्यादा स्वदेशी उपकरण और तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। आईएनएस महेंद्रगिरि स्वदेशी अत्याधुनिक हथियारों, सेंसर और इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर सिस्टम से लैस है। यह हवाई हमलों, दुश्मन के जहाजों और पनडुब्बियों से एक साथ मुकाबला करने में सक्षम है। यह हिंद महासागर में भारत की समुद्री सुरक्षा को और मजबूत करेगा। राजनाथ सिंह ने कहा कि आंध्र प्रदेश के कुरनूल में आठ ड्रोन कंपनियों के समूह के साथ 'ड्रोन सिटी' विकसित की जा रही है। उन्होंने कहा कि जिस तरह सूरत 'डायमंड सिटी' और बेंगलुरु 'सिलिकॉन वैली' के नाम से जाना जाता है, उसी तरह आने वाले समय में कुरनूल देश का ड्रोन हब बनेगा। आईएनएस महेंद्रगिरि की खासियतः-75फीसदी से ज्यादा स्वदेशी तकनीकः इसे भारतीय नौसेना के वॉरशिप डिजाइन ब्यूरो ने डिजाइन किया है और मुंबई स्थित मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने तैयार किया है। युद्धपोत में 75फीसदी से ज्यादा स्वदेशी उपकरण और तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। इसके निर्माण में देशभर की कई एमएसएमई कंपनियों ने भी योगदान दिया है, जिससे रक्षा उत्पादन को बढ़ावा मिलने के साथ रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं।मॉडर्न हथियारों से लैसः

महेंद्रगिरि में आधुनिक सरफेस-टू-सरफेस और सरफेस-टू-एयर मिसाइल सिस्टम, एडवांस इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर सिस्टम, एंटी-साबमारीन वॉरफेयर सिस्टम और इंटीग्रेटेड कॉम्बैट मैनेजमेंट सिस्टम लगाए गए हैं। स्टेल्थ तकनीक और हाई-स्पीड क्षमताः महेंद्रगिरि में उन्नत स्टेल्थ तकनीक दी गई है, जिससे इसकी रडार पर पहचान करना मुश्किल होगा। इसमें कम्बाइंड डीजल और गैस प्रोपल्शन सिस्टम लगाया गया है, जो इसे लंबी दूरी तक तेज गति से संचालन की क्षमता देता है। अब जानिए प्रोजेक्ट 17ए के बारे में-प्रोजेक्ट-17ए के तहत भारतीय नौसेना के लिए कुल 7 स्टेल्थ गाइडेड-मिसाइल फ्रिगेट बनाए जा रहे हैं। इनमें से 4 युद्धपोत मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स मुंबई बना रहा है। 3 युद्धपोत गार्डन रीच शिप बिल्डर्स कोलकाता बना रहा है।प्रोजेक्ट-17ए, प्रोजेक्ट-17 (शिवालिक क्लास) का एडवांस्ड वर्जन है। इसमें पहली बार भारत में बड़े युद्धपोतों के निर्माण में इंटीग्रेटेड कंस्ट्रक्शन (ब्लॉक निर्माण) तकनीक का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया। इसमें जहाज के अलग-अलग हिस्से पहले तैयार किए जाते हैं और बाद में उन्हें जोड़कर पूरा युद्धपोत बनाया जाता है। इससे निर्माण का समय कम होता है और गुणवत्ता बेहतर रहती है। नॉलेजः पर्वतों-नदियों के नाम पर युद्धपोतों के नाम रखे-आईएनएस महेंद्रगिरि का नाम जिस महेंद्रगिरि पर्वत पर रखा गया है, उसका धार्मिक महत्व भी है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह पर्वत भगवान परशुराम की तपस्थली थी। रामायण में भी इसका उल्लेख मिलता है। भारतीय नौसेना अपनी कई युद्धपोतों के नाम देश के ऐतिहासिक पर्वतों, नदियों और विरासत से जुड़े स्थलों पर रखती है, जिससे सैन्य परंपरा और सांस्कृतिक पहचान दोनों को सम्मान मिलता है।

गडकरी बोले-ई20 पेट्रोल से गाड़ी खराब, तो कंपनियां मुफ्त पुर्जे बदलें, माना- इससे माइलेज घटा

नयी दिल्ली।'गडकरी ने बयान की 5 खास बातेंः-परफॉर्मेंस में

ट्रैफिक में रुक-रुककर चलने से गाड़ियां निचले गियर में चलती हैं, जिससे माइलेज गिरता है, लेकिन हाईवे पर लगातार 100किमी/घंटा की स्पीड पर अंतर दिखेगा। फ्लेक्स इंजन में दिक्कत नहींः एआरएआई की रिपोर्ट के मुताबिक, खास तौर पर बने फ्लेक्स-फ्यूल इंजनों में माइलेज की कोई समस्या नहीं है। देश की करीब 12 कंपनियां अब फ्लेक्स मॉडल पर काम कर रही हैं। ब्राजील मॉडल और रु75 की कीमतः ब्राजील 1970 से 27फीसदी एथेनॉल ब्लेंड का इस्तेमाल कर रहा है। सरकार का लक्ष्य जनता को अलग-अलग कीमतों पर फ्यूल ब्लेंड्स का विकल्प देना हैः अभी एथेनॉल की कीमत करीब रु75/लीटर है। भारत में क्यों हो रहा है ई20 पेट्रोल का विरोध? भारत में 20फीसदी एथेनॉल और 80फीसदी पेट्रोल के इस मिश्रण (ई20) का विरोध हो रहा है। खासकर 2023 से पहले बनी पेट्रोल गाड़ियों के मालिक परेशान हैं। उनका दावा है कि इस फ्यूल से गाड़ियों का माइलेज कम हो रहा है, मेंटेनेंस का खर्च बढ़ गया है और इंजन के पार्ट्स जल्दी खराब हो रहे हैं। उन्होंने द इंडियन एक्सप्रेस से कहा कि ई20 फ्यूल से सोशल मीडिया पर गाड़ियों के खराब होने या नुकसान की खबरें गलत हैं और यह एक झूठा नैरेटिव है। हालांकि, उन्होंने पुरानी गाड़ियों का माइलेज कम होने की बात मानी है। सर्विसिंग के दौरान मुफ्त बदले जाएंगे रबर वॉशर्सः-गडकरी ने कहा कि सर्विसिंग के लिए जाने वाली पुरानी कारों में पहले वॉशर्स मेटल (धातु) के बने होते थे, जबकि अब ये रबर के बनाए जा रहे हैं। हमने कंपनियों को सख्त निर्देश दिए हैं कि सर्विसिंग के दौरान ग्राहकों से बिना कोई एक्स्ट्रा चार्ज लिए इन वॉशर्स को बदला जाए।

सीनियर टीचर भर्ती एग्जाम 12 जुलाई से, एडमिट कार्ड जारी-9651 पदों के लिए 27 शहरों में होगी परीक्षा, 18 जुलाई तक चलेगा एग्जाम

अजमेर। माध्यमिक शिक्षा विभाग में हिंदी और अंग्रेजी सहित

10 विषयों के 9651 पदों पर होने वाली वरिष्ठ अध्यापक भर्ती परीक्षा 12 जुलाई (रविवार) से शुरू होगी। राजस्थान लोक सेवा आयोग(आरपीएससी) की ओर से परीक्षा के लिए एडमिट कार्ड जारी कर दिए गए हैं, जिन्हें अभ्यर्थी आधिकारिक वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते हैं। भर्ती परीक्षा 27 जिलों में बनाए गए परीक्षा केंद्रों पर आयोजित होगी और 18 जुलाई तक चलेगी। परीक्षा सामग्री भी सभी जिलों में पहुंचाई जा चुकी है। परीक्षा को लेकर सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। इन जिलों में परीक्षा होगी आयोजितः-अभ्यर्थियों की संख्या ज्यादा होने के कारण आयोग अजमेर, अलवर, बांसवाड़ा, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चूरू, दौसा, डीडवाना-कुचामन, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, जयपुर, झुंझुनूं, जोधपुर, कोटा, कोटपूतली-बहरोड़, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, सवाई माधोपुर, सीकर, सिरोही, श्रीगंगानगर, टोंक और उदयपुर जिलों में यह परीक्षा लेगा। सभी जिलों के प्रशासनिक और पुलिस अफसरों के साथ आयोग ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से तैयारी बैठक कर ली है। परीक्षा सुचारू और नकल रहित हो, इसके लिए फ्रिस्किंग पर ही सबसे अधिक फोकस रखने के लिए कहा गया है। रोजाना दो पारियों में होगी परीक्षाः-इस परीक्षा में 12.31 लाख अभ्यर्थी बैठेंगे। रोजाना दो पारियों में यह परीक्षा ली जाएगी। आयोग सूत्रों के अनुसार परीक्षा सामग्री सभी जिलों को भेज दी गई है। सुरक्षा व्यवस्था के तहत प्रश्न पत्रों और अन्य गोपनीय सामग्री को जिला मुख्यालयों में सुरक्षित रखा गया है। परीक्षा आयोजन से दो दिन पहले सभी जिलों में नियंत्रण कक्ष (कंट्रोल रूम) भी शुरू कर दिए जाएंगे।

देशभर में रोज 13 स्कूल बंद, अधिकांश स्कूल मध्यप्रदेश के, हायर एजुकेशन में लड़कियों की संख्या 42.2फीसदी बढ़ी

नयी दिल्ली। भारत की स्कूली शिक्षा पर एकीकृत जिला शिक्षा

सूचना प्रणाली (यूडीआईएसई प्लस) और एआईएसएचई की रिपोर्ट शिक्षा से जुड़े दो अलग-अलग पहलुओं को उजागर करती है। यूडाइस की रिपोर्ट के अनुसार देश में रोज 13 स्कूल बंद हुए। स्कूल बंद होने वाले राज्यों में मप्र सबसे आगे है। एआईएसएचई की रिपोर्ट बताती है कि हायर एजुकेशन में लड़कियों की संख्या बढ़ी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2025- 26 में हायर एजुकेशन में लड़कियों का ग्रॉस एनरोलमेंट रेशियो (जीईआर 31.2) दर्ज किया गया, जो लड़कों से ज्यादा है। यूडीआईएसई प्लस की रिपोर्टःबंद स्कूलों में 2,426 सिर्फ मध्यप्रदेश केः- देशभर में हर रोज 13 स्कूल बंद हो रहे हैं। साल 2025 - 26 के दौरान देशभर में कुल 4791 स्कूल बंद हो गए। स्कूल बंद मे मध्यप्रदेश सबसे आगे है। देश में बंद हुए कुल स्कूलों में से आधे से भी ज्यादा 2,426 स्कूल सिर्फ मध्यप्रदेश के हैं। तेलंगाना के 1392 स्कूल बंदः- साल 2024 - 25 के दौरान देश में 14 लाख 71 हजार 473 स्कूल थे। लेकिन 2025 - 26 में ये संख्या घटकर 14 लाख 66 हजार 682 रह गई। बंद होने वाले बाकी स्कूलों में से 1392 तेलंगाना, 568 पश्चिम बंगाल, 474 आंध्र प्रदेश, 369 तमिलनाडु, 281 कर्नाटक और 266 हिमाचल प्रदेश में थे। 5,663 स्कूलों में छात्र नहीं, टीचर 20,667 देश में जीरो एनरोलमेंट यानी बिना छात्रों वाले स्कूलों की संख्या में पहली बार गिरावट दर्ज की गई है। जीरो एनरोलमेंट वाले स्कूल बीते एक साल में 7,993 से घटकर 5,663 रह गए। इनमें 20,667 टीचर्स भी तैनात हैं। पश्चिम बंगाल में बीते साल ऐसे स्कूलों की संख्या में 321 की बढ़ोतरी दर्ज की गई। इन स्कूलों में 1,573 टीचर्स भी पढ़े, जिन्हें किसी को पढ़ाना नहीं है। पश्चिम बंगाल में अब 4,133 स्कूलों में 19,502 टीचर्स हैं, जिनके पास किसी को पढ़ाने की जिम्मेदारी नहीं है।उत्तरप्रदेश में पिछले सत्र में बिना नामांकन वाले 81 स्कूल थे और 56 टीचर्स के पास किसी को पढ़ाने का जिम्मा नहीं था। 2025 - 26 में बिना नामांकन वाले स्कूलों की संख्या बढ़कर 313 हो गई और इन स्कूलों में टीचर्स बढ़कर 177 हो गए। सबसे दिलचस्प राज्य छत्तीसगढ़ है जहां 2024 - 25 में जीरो एनरोलमेंट वाला एक भी स्कूल नहीं था लेकिन 2025 - 26 में ऐसे 149 स्कूल हो गए। वहां 140 टीचर्स भी तैनात हैं। एआईएसएचई की रिपोर्टः- हायर एजुकेशन में लड़कियों की संख्या बढ़ीः-केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (एआईएसएचई) की साल 2022-23 और 2023-24 की रिपोर्ट जारी कर दी है। रिपोर्ट के मुताबिक, देश में हायर एजुकेशन का दायरा लगातार बढ़ रहा है, जिसके तहत हायर एजुकेशन में ग्रॉस एनरोलमेंट रेशियो (जीईआर) पहली बार बढ़कर 30 पहुंच गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि हायर एजुकेशन में लड़कियों का जीईआर 31.2 दर्ज किया गया, जो पुरुषों से अधिक है। इससे पता चलता है कि हायर एजुकेशन में लड़कियों की भागीदारी बढ़ी है, जो अपने आप में एक नया रिकॉर्ड है। एआईएसएचई में संस्थान स्वयं पोर्टल पर आंकड़े अपलोड करता है। साल 2022-23 में 56,180 और 2023-24 में 59,533 हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूट्स ने सर्वे में भाग लिया। दोनों वर्षों में भागीदारी 90फीसदी से अधिक रही। लगातार 7वें वर्ष हायर एजुकेशन में महिलाएं अधिकः- रिपोर्ट के अनुसार साल 2014-15 में हायर एजुकेशन का ग्रॉस एनरोलमेंट रेशियो (जीईआर) 23.7 था, जो साल 2022-23 में बढ़कर 29.5 में पहुंचा। वहीं साल 2023-24 में ये 30 दर्ज किया गया है। वहीं इसमें महिलाओं की भागीदारी यानी जीईआर साल 2014-15 में 22.9 था, जो साल 2023-24 में बढ़कर 31.2 पहुंच गया है। इस तरह हायर एजुकेशन में महिलाओ की संख्या बढ़ी। रिपोर्ट में बताया गया है कि जेंडर पैरिटी इंडेक्स 2023-24 में 1.08 रहा है। इसका अर्थ है कि लगातार सातवें वर्ष उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों की तुलना में अधिक रही। हायर एजुकेशन में एससी छात्रों की संख्या भी बढ़ीः-रिपोर्ट के अनुसार हायर एजुकेशन पाने में सामाजिक रूप से वंचित वर्गों की भागीदारी भी बढ़ी है, जिसके तहत अनुसूचित जाति (एससी) छात्रों का नामांकन 2014-15 के 46.07 लाख से बढ़कर 2023-24 में 69.72 लाख हो गया। जबकि अनुसूचित जनजाति छात्रों का नामांकन 16.41 लाख से बढ़कर 28.83 लाख पहुंच गया। वहीं अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के छात्रों का नामांकन भी 1.13 करोड़ से बढ़कर 1.80 करोड़ हुआ। महिला शिक्षकों की संख्या 7.78 लाख हुईः-रिपोर्ट के अनुसार हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूट्स में शिक्षकों की संख्या भी बढ़ी है। साल 2023-24 में कुल 17.32 लाख शिक्षक कार्यरत हैं, जिनमें 55.1फीसदी पुरुष और 44.9फीसदी महिलाएं हैं। महिला शिक्षकों की संख्या 2014-15 के 5.69 लाख से बढ़कर 2023-24 में 7.78 लाख हो गई।

कैलाश मानसरोवर यात्रा का पहला दल पहुंचा चीन, लिपुलेख दर्रे पर चीनी सुरक्षा एजेंसियों ने दस्तावेज जांचे

पिथौरागढ़। करीब पांच साल बाद शुरू हुई कैलाश मानसरोवर यात्रा में शुक्रवार को पहला दल लिपुलेख दर्रा पार कर तिब्बत

(चीन) पहुंच गया है। 52 सदस्यीय दल ने सुबह 9 बजे सीमा पार की, जहां चीनी सुरक्षा एजेंसियों ने यात्रियों के दस्तावेजों की जांच के बाद उन्हें प्रवेश दिया। पहला दल सुबह 7 बजे नाभीढांग से लिपुलेख दर्रे के लिए रवाना हुआ। दल में 48 श्रद्धालु, एक चिकित्सा कर्मी और तीन किचन स्टाफ शामिल थे। आईटीबीपी के जवान यात्रियों को सीमा तक लेकर पहुंचे। लिपुलेख दर्रे पर चीनी सुरक्षा एजेंसियों ने यात्रियों के दस्तावेजों की जांच की, जिसके बाद दल को चीनी प्रशासन की निगरानी में कैलाश मानसरोवर यात्रा के अगले चरण के लिए रवाना कर दिया गया। वहीं, तवाघाट-गुंजी सड़क कुछ समय बंद रहने से दूसरा दल देर से रवाना हुआ, लेकिन दोपहर तक सभी यात्री सुरक्षित गुंजी पहुंच गए। सड़क बंद होने से दूसरा दल डेढ़ घंटे रुकाः-यात्रा का दूसरा दल शुक्रवार को धारचूला से गुंजी के लिए निकला। तवाघाट-गुंजी सड़क पर भूस्खलन के कारण मार्ग कुछ समय के लिए बंद हो गया, जिससे यात्रियों को करीब डेढ़ घंटे इंतजार करना पड़ा। सड़क खुलने के बाद दल आगे बढ़ा और दोपहर तक सभी यात्री गुंजी पहुंच गए। प्रशासन और कुमाऊं मंडल विकास निगम (केएमवीएन) ने यात्रा मार्ग पर भोजन, आवास, स्वास्थ्य और सुरक्षा की व्यवस्थाएं बनाए रखीं। मौसम को देखते हुए यात्रियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा पर लगातार निगरानी की जा रही है। टनकपुर में सीएम धामी ने दिखाई थी हरी झंडीः-कैलाश मानसरोवर यात्रा इस वर्ष करीब पांच साल बाद उत्तराखंड के टनकपुर-लिपुलेख मार्ग से फिर शुरू हुई है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने 5 जुलाई को टनकपुर से पहले दल को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया था। इस वर्ष लिपुलेख मार्ग से 10 दलों में कुल 500 श्रद्धालु यात्रा करेंगे। अब कितना आसान हुआ सफरः-इस बार कैलाश मानसरोवर यात्रा की कुल दूरी 1738 किलोमीटर होगी। इसमें लगभग 1690 किलोमीटर यात्रा वाहन से और सिर्फ 38 किलोमीटर पैदल ट्रेक रहेगा। साल 2019 से पहले यात्रियों को धारचूला से लिपुलेख दर्रे तक 60 किलोमीटर से ज्यादा पैदल चलना पड़ता था। रास्ते में ऑक्सीजन की कमी और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यात्रा काफी चुनौतीपूर्ण होती थी। अब भारत और चीन दोनों तरफ सड़क बनने के बाद यह यात्रा काफी आसान हो गई है। सीमावर्ती क्षेत्र तक वाहन पहुंचने लगे हैं, जिससे बुजुर्ग और पहली बार यात्रा करने वाले श्रद्धालुओं के लिए भी यह यात्रा पहले की तुलना में ज्यादा सुलभ हो गई है। 2020 से बंद यात्रा इस साल फिर हुई शुरूः-कैलाश मानसरोवर यात्रा वर्ष 2020 से बंद थी। पहले कोरोना महामारी और बाद में पूर्वी लद्दाख के गलवान क्षेत्र में भारत-चीन सीमा पर सैन्य तनाव के कारण यात्रा का संचालन लगातार बंद रहा। दोनों देशों के बीच सहमति बनने के बाद इस वर्ष यात्रा दोबारा शुरू हुई है। उत्तराखंड के लिपुलेख मार्ग से जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए टनकपुर पहला प्रमुख पड़ाव है। यहां से यात्री पिथौरागढ़, धारचूला और गुंजी होते हुए लिपुलेख दर्रे के रास्ते कैलाश मानसरोवर पहुंचेंगे। इस बार यात्रा के लिए दो मार्ग निर्धारित किए गए हैं - उत्तराखंड का लिपुलेख दर्रा और सिक्किम का नाथूला दर्रा। क्यों खास है इस साल की यात्राः-इस साल की कैलाश मानसरोवर यात्रा धार्मिक दृष्टि से भी बेहद खास मानी जा रही है। 60 वर्षों बाद अग्नि अश्व वर्ष का दुर्लभ योग बन रहा है, जिसे हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति का महत्वपूर्ण समय माना जाता है। तिब्बती ज्योतिष दौलत रायपा के अनुसार यह 60 साल के चक्र का विशेष वर्ष होता है। मान्यता है कि इस वर्ष की गई एक परिक्रमा का फल सामान्य वर्षों की 12 परिक्रमा के बराबर होता है। इसी वजह से इस बार देश ही नहीं, बल्कि दुनिया भर से श्रद्धालुओं के इस यात्रा में शामिल होने की संभावना जताई जा रही है।

राममंदिर चढ़ावा चोरी कलंक, छोटापन महसूस कर रहा-नृपेंद्र मिश्रा

सपा का पोस्टर- 'राम नाम जपना-चढ़ाया दान अपना'

अयोध्या। अयोध्या राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले में निर्माण

समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्रा ने शनिवार को कहा- 'यह एक तरह का कलंक है। इसका हम सभी

को सिर्फ खेद ही नहीं है, बल्कि हम खुद को छोटा महसूस कर रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि व्यवस्था में सुधार होगा और इस तरह की घटनाएं दोबारा नहीं होंगी।' उन्होंने कहा- 'एक हाईलेवल समिति बनाई गई है। संभवतः जज उसके अध्यक्ष हैं। वे अपना निर्णय और संस्तुति ट्रस्ट को देंगे। ट्रस्ट उस पर विचार करेगा।' नृपेंद्र मिश्रा राम मंदिर निर्माण समिति की दूसरे दिन की बैठक में हिस्सा लेने शनिवार को रामकथा संग्रहालय पहुंचे। इससे पहले शुक्रवार को राम मंदिर परिसर में हुई बैठक में ट्रस्ट का कोई सदस्य नहीं पहुंचा था। इधर, गोरखपुर में शुक्रवार रात सपा नेता उपेंद्र दत्त शुक्ला ने पोस्टर लगवाए हैं। इसमें लिखा है- राम नाम जपना, श्रद्धालुओं द्वारा चढ़ाया दान अपना।' 'रामचंद्र कह गए सिया से, ऐसा कलयुग आएगा, चोर करेगा मंदिर में चोरी, चौकीदार देखता रह जाएगा।' रायबरेली में विश्व हिंदू रक्षा परिषद (विहिप) के राष्ट्रीय महामंत्री राहुल सिंह ने सपा पर पलटवार करते हुए पोस्टर लगवाए हैं। इसमें लिखा है- राम मंदिर के चंदे पर सवाल, आतंकवाद के चंदे पर खामोशी? प्रभु राम हमारी आस्था हैं, राजनीति का हथियार नहीं। कांग्रेस के यूपी प्रभारी बोले- नैतिक जिम्मेदारी सरकार और प्रधानमंत्री कीः- कांग्रेस के यूपी प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम ने झांसी में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। राम मंदिर में चढ़ावा चोरी की घटना पर भाजपा सरकार से कई तीखे सवाल किए। कहा- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम मंदिर निर्माण को अपनी उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया है, इसलिए यदि किसी प्रकार की अनियमितता या गड़बड़ी सामने आती है तो उसकी नैतिक जिम्मेदारी भी सरकार और प्रधानमंत्री की बनती है। भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने कहा- अफसोस सभी को है। जिन लोगों ने ऐसा कृत्य किया है, उन्हें छोड़ा नहीं जाएगा। वे लोग जितना ले गए हैं, उससे ज्यादा ही देकर जाएंगे। वहीं कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी ने कहा, अयोध्या में चढ़ावा चोरी और डकैती हुई है, लेकिन किसी को कोई सजा नहीं मिली। मामला जो दिख रहा है उससे कई गुना बड़ा है। जहां माल गया है वे सरकार चला रहे हैं। उनका नाम कौन लेगा। मैं आलोक कुमार से सहमत हूं कि जांच होगी, लेकिन सजा सरकार नहीं बल्कि भारत की राम भक्त जनता देगी।

'गुरु-प्राकट्य महोत्सव पर प्रकृति और संस्कृति का अद्भुत संगम'

परम पूज्य आचार्य श्री मिथिलेशनन्दिनीशरण जी महाराज के जन्मोत्सव पर गुप्तकाशी विकास परिषद ने किया बृहद् वृक्षारोपण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। 'आचार्यदेवो भव।' भारतीय संस्कृति का यह अमर वाक्य आषाढ़ कृष्ण द्वादशी के पावन दिवस पर साकार होता दिखाई दिया, जब सिद्धपीठ श्री हनुमन्निवास, अयोध्या धाम के परम पूज्य संत, वेद-वेदान्त के प्रकाण्ड विद्वान, सनातन संस्कृति के प्रखर प्रवक्ता एवं युगद्रष्टा पूज्य आचार्य श्री मिथिलेशनन्दिनीशरण जी महाराज का पावन प्राकट्य महोत्सव श्रद्धा, भक्ति और अनुपम उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर गुप्तकाशी विकास परिषद द्वारा ईश्वर प्रसाद महाविद्यालय, हिन्दुवारी के विशाल परिसर में बृहद् वृक्षारोपण किया गया। यह आयोजन केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि भारतीय ऋषि परंपरा, गुरु-भक्ति, प्रकृति संरक्षण और लोकमंगल के महान संकल्प का सजीव उत्सव बन गया। परिषद के संरक्षक मंडल सदस्य एवं राष्ट्रीय साहित्यकार पारस नाथ मिश्र ने कहा कि पूज्य गुरुदेव ज्ञान, तप, भक्ति, करुणा, शील और धर्म के साक्षात् प्रकाश-स्तंभ हैं। उनके प्राकट्य दिवस पर लगाया गया प्रत्येक पौधा आने वाले समय में मानवता के लिए शीतल छाया, प्राणवायु और जीवन का संदेश देगा। उन्होंने कहा कि गुरुदेव का जीवन स्वयं एक कल्पवृक्ष के समान है, जिसकी छाया में समाज को धर्म, संस्कार और आत्मबोध का अमृत प्राप्त होता है। श्री मिश्र ने यह भी कहा कि जो स्वर्ग की कल्पना हम करते हैं उसे स्वर्ग में कल्पवृक्ष और कामधेनु ही महत्वपूर्ण है ऐसी स्थिति में इस धरती पर ही कल्पवृक्ष व कामधेनु प्राप्त कर स्वर्ग की अनुभूति कर सकते हैं। भोजपुरी के राष्ट्रीय कवि जगदीश पंथी ने कहा कि गुरुदेव उनके आध्यात्मिक संदेशों ने ग्रामीण समाज में नैतिकता, संस्कार और राष्ट्रचेतना का नया प्रकाश फैलाया। संरक्षक मंडल सदस्य व साहित्यकार अजय चतुर्वेदी कक्का ने कहा कि गुरुदेव की स्मृति में लगाए गए ये वृक्ष आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य धरोहर सिद्ध होंगे। गुप्त काशी विकास परिषद के अध्यक्ष पंडित आलोक कुमार चतुर्वेदी ने किया कार्यक्रम ने कहा कि ऐसे संतों का अवतरण किसी एक क्षेत्र के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के आध्यात्मिक उत्थान के लिए होता है। परिषद के वरिष्ठ सचिव एवं सोनभद्र बार एसोसिएशन के पूर्व कोषाध्यक्ष सुरेश पाठक ने घोषणा की कि परिषद गुरुदेव के संरक्षण एवं प्रेरणा से जनपदभर में पर्यावरण संरक्षण, जल-संरक्षण, वृक्षारोपण तथा भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण का व्यापक अभियान चलाएगी। भाजपा पूर्व मीडिया प्रभारी अनूप तिवारी व प्रधान संघ सुरेश शुक्ल द्वय ने कहा कि युवा पीढ़ी के लिए गुरुदेव केवल आध्यात्मिक आचार्य नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण के प्रेरणास्रोत हैं। उनके आदर्श युवाओं में चरित्र, सेवा, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति का संचार करते रहेंगे। समारोह का समापन वैदिक मंगलकामना, गुरु-वंदना और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' के सामूहिक उच्चारण के साथ हुआ। उपस्थित सभी लोगों ने संकल्प लिया कि प्रत्येक वर्ष गुरुदेव के प्राकट्य महोत्सव पर वृक्षारोपण कर प्रकृति और संस्कृति दोनों की सेवा करेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संरक्षक हेमनाथ पाण्डेय व कार्यक्रम का सफल संचालन वरिष्ठ पत्रकार भोलानाथ मिश्र तथा प्रस्तावना प्राचार्य बिमलेश त्रिपाठी ने किया कार्यक्रम के आयोजक विद्यालय प्रबंधक मनीष पांडे रहे। कार्यक्रम में प्रकाश त्रिपाठी,पारस नाथ मिश्र,अनूप तिवारी,सुरेश शुक्ल,सुरेश पाठक,आलोक कुमार चतुर्वेदी,अजय चतुर्वेदी कक्का,मनीष पाण्डेय,बृजेश कुमार शुक्ला,जगदीश पंथी,हेमनाथ पाण्डेय,डॉ विमलेश कुमार तिवारी , राजेश कुमार द्विवेदी,मृत्युंजय पाठक,विमलेश कुमार पाठक,श्रीमती गीता मौर्य,विनय प्रजापति,बृजेश सिंह पटेल,विनीत पाण्डेय,भोलानाथ मिश्र,श्रीमती सरिता जी उपस्थित रहे।

अन्नदाताओ का अनादर नहीं किया जायेगा बर्दाश्त- संदीप मिश्रा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) चतरा (सोनभद्र)। चतरा ब्लॉक के रामगढ़ सहकारी समिति पर अपने सभी अन्नदाताओ के पेड़ है तो प्राण है अभियान के तहत फलदार पौधे वितरित किए गये किसान नौजवान संघर्ष मोर्चा के संयोजक संदीप मिश्रा के नेतृत्व आज का किसानो के साथ मिलकर रामगढ़ सहकारी समिति पर जोरदार प्रदर्शन खाद को लेकर किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संदीप मिश्रा ने कहा कि आज ये सरकार जो किसानों की आय दोगुनी करने की केवल भाषणों में बात करती है आज वो सरकार पूरी तरह से खेती किसानी बन्द करके कारपोरेट घरानो को सौपने के चक्कर में कभी खाद नहीं देगी तो कभी फसल नहीं खरिदेगी आज पूरी तरह से ये सरकार किसानो के उत्पिडन में लगी है इसको मोर्चा किसी भी किमतपर बर्दाश्त नहीं करेगा साथ ही मोर्चा संयोजक ने जिलाधिकारी से आग्रह किया कि समितियों का स्वयं निरिक्षण करते हुए सभी अन्नदाताओ को उनके रकबे के आधार पर डिएपी व यूरिया देने की व्यवस्था करे। अग्रणी किसान मृत्युजय मिश्र ने कहा कि हमें रकबे के आधार पर खाद मिले वही एक अग्रणी किसान भोला सिंह जी ने कहा कि हम किसानो के मानक तय करने वाले हमारी खेती बारी ऐसी में बैठकर तय न करे। कार्यक्रम में गुड्डू मिश्र अनिल मिश्र शनि मिश्र विजय पटेल दिनेश मौर्य सत्रुधन बिन्द आकाश चौहान दिनेश चेरो व सुरेस मौर्य व सैकड़ों किसान उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस साप्ताहिक पखवाड़ा के उपलक्ष्य में अभाविप ने चलाया 'ऋतुमति अभियान', सेनेटरी पैड का किया वितरण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 78वें स्थापना दिवस एवं राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित साप्ताहिक कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत 'सेवार्थ विद्यार्थी' गतिविधि के माध्यम से ऋतुमति अभियान का सेठ एम आर जयपुरिया स्कूल रॉबर्ट्सगंज में आयोजन किया गया। इस अभियान के तहत छात्राओं एवं महिलाओं के मध्य सेनेटरी पैड का वितरण किया गया तथा मासिक धर्म स्वच्छता के प्रति जागरूकता का संदेश दिया गया। कार्यकर्ताओं ने उपस्थित छात्राओं एवं महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता बनाए रखने, सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण सेनेटरी पैड के उपयोग तथा इससे जुड़े सामाजिक भ्रमों को दूर करने के लिए प्रेरित किया। परिषद ने कहा कि स्वस्थ एवं जागरूक समाज के निर्माण में महिलाओं के स्वास्थ्य और सम्मान का विशेष महत्व है। इसी उद्देश्य से अभाविप समय-समय पर समाजोपयोगी एवं जनजागरूकता के कार्यक्रमों का आयोजन करती रहती है। राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस के अवसर पर आयोजित यह अभियान विद्यार्थियों में सेवा, संवेदनशीलता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल रहा। इस दौरान महिला सशक्तिकरण सेल की प्रभारी डॉ. तृप्ति मिश्रा, वरिष्ठ शिक्षिका वर्षा सिंह, जिला छात्रा प्रमुख विष्णुप्रिया, प्रीति त्रिपाठी, ऊषा द्विवेदी, स्वाती सिंह, प्रियंका, ज्योति सिंह, अंजली केशरी, कशिश आदि उपस्थित रहीं।

डी.ए.वी के छात्र प्रसिद्ध श्रीवास्तव ने जिले में दूसरा स्थान किया प्राप्त, विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन

सोनभद्र। बीजपुर में डीएवी पब्लिक स्कूल एनटीपीसी रिहंदनगर के पांचवीं कक्षा के छात्र प्रसिद्ध श्रीवास्तव ने हिंदुस्तान ओलंपियाड में जिले में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। इस उपलब्धि से उन्होंने विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। बौद्धिक एवं शैक्षणिक विकास के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा को पहचानने एवं निखारने के लिए ओलंपियाड का अपना एक विशेष महत्व है। हिंदुस्तान टाइम्स समूह द्वारा आयोजित इस ओलंपियाड में प्रसिद्ध श्रीवास्तव को जिले में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर ट्रॉफी, प्रमाण पत्र और इक्कीस सौ रुपये का चेक प्रदान किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य राजकुमार ने कहा कि विश्व के सबसे बड़े ओलंपियाड में से एक हिंदुस्तान ओलंपियाड में जिले में द्वितीय स्थान प्राप्त करना विद्यालय और पूरे क्षेत्र के लिए गर्व की बात है। उन्होंने बताया कि यह ओलंपियाड विद्यार्थियों को अपनी शैक्षणिक और बौद्धिक प्रतिभा को राष्ट्रीय स्तर पर परखने का शानदार अवसर प्रदान करता है। प्राचार्य राजकुमार ने प्रसिद्ध श्रीवास्तव को आशीर्वाद देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने इस ओलंपियाड को आयोजित करने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले शिक्षकों नीरज गुप्ता, रंजना सिंह और शगुफ्ता शबनम को भी धन्यवाद दिया। डॉ. आर. के. झा ने भी प्रसिद्ध श्रीवास्तव को बधाई और आशीर्वाद दिया, साथ ही अन्य विद्यार्थियों को भी ऐसी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर विजय तिवारी, डॉ. राजेश कुमार श्रीवास्तव, मीना सिंह, माधुरी यादव, नम्रता चौधरी, बबिता कबौजिया, अलिशा सिंह, पूजा सिंह और कृति सिंह सहित कई शिक्षक-शिक्षिकाएं मौजूद रहे।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

10 साल का बेटा पैसे की कीमत नहीं समझता,दोस्तों को देखकर महंगे कपड़े-खिलौने मांगता है, कैसे सही रास्ते पर लाये

मुंबई। सवाल- हमारा बेटा 10 साल का है और हम एक मिडिल क्लास फैमिली हैं। हम अपने बेटे की जरूरतें पूरी करने की हरसंभव कोशिश करते हैं। लेकिन जैसे-जैसे वो बड़ा हो रहा है, हर नई चीज को अपनी जरूरत समझने लगा है। कभी महंगे जूते, कभी नए खिलौने और कभी ब्रांडेड सामानों की डिमांड करता है। मना करो तो कहता है कि उसके दोस्तों के मम्मी-पापा तो सब दिलाते हैं। वो दूसरों से तुलना करने लगा है। उसे समझ नहीं कि पैसे मेहनत से कमाए जाते हैं। जीवन में हर इच्छा तुरंत पूरी नहीं होती। वो अभी छोटा है। उसकी उम्र के हिसाब से ये बात हम उसे कैसे सिखाएं-समझाएं? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट: रिद्धि दोषी पटेल, चाइल्ड एंड पेरेंटिंग साइकोलॉजिस्ट, मुंबई जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। जवाब- सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। आपकी चिंता बिल्कुल वाजिब है। आपका बेटा अपने दोस्तों को देखकर नई-नई चीजें खरीदने की जिद कर रहा है। बहुत से माता-पिता इस स्थिति का सामना करते हैं। दरअसल 8-10 साल की उम्र में बच्चे पैसे की वैल्यू नहीं समझते। उन्हें सिर्फ इतना पता होता है कि जो चीज उन्हें पसंद है, वह उनके पास होनी चाहिए। उन्हें यह समझ नहीं होती कि पैसे कहां से आते हैं, कैसे कमाए जाते हैं या बजट कैसे बनाया जाता है। लेकिन अच्छी बात ये है कि यही वह समय है, जब बच्चे को पैसे की वैल्यू और सेविंग की आदत सिखाई जा सकती है। जब उसे अपनी जरूरतों और इच्छाओं में फर्क करना सिखाया जा सकता है। तो चलिए समझते हैं कि ये काम कैसे करें। बच्चे पैसों की वैल्यू क्यों नहीं समझते? बच्चे पैसे की वैल्यू इसलिए नहीं समझ पाते, क्योंकि उनकी दुनिया और हमारी दुनिया अलग होती है। उनकी सोच कुछ इस तरह काम करती है– 1. वे नहीं जानते, पैसा कहां से आता है- उन्हें सिर्फ इतना पता होता है कि पैसे से उनकी पसंद की चीजें खरीदी जा सकती हैं। वे अभी यह नहीं समझते कि हर रुपए के पीछे मेहनत, समय और जिम्मेदारी होती है। 2. पैसों की कमी का अनुभव नहीं- उनकी पढ़ाई, खाना, कपड़े, खिलौने और सारी जरूरतें माता-पिता पूरी कर देते हैं। इसलिए उन्हें यह एहसास नहीं हो पाता कि हर खर्च सोच-समझकर किया जाता है। 3. दूसरों को देखकर सीखना- दोस्तों के महंगे जूते, खिलौने, गैजेट्स या सोशल मीडिया

पर दिखने वाली लाइफस्टाइल उन्हें आकर्षित करती है। ऐसे में वे भी उन चीजों को अपनी जरूरत समझने लगते हैं। 4. घर में पैसों के बारे में बात न होना- अगर बच्चे को कभी यह नहीं बताया जाता कि बजट कैसे बनता है, बचत क्यों जरूरी है और हर इच्छा तुरंत पूरी क्यों नहीं की जा सकती, तो वह पैसों की अहमियत सीख ही नहीं पाता। बच्चे पैसों की वैल्यू क्यों नहीं समझते? बच्चे पैसे नहीं कमाते। उन्हें नहीं पता, जॉब क्या होती है। जॉब में क्या करना पड़ता है। उनकी सब जरूरतें पूरी होती हैं। वे सोशल मीडिया से सीखते हैं। दूसरे बच्चों को कॉपी करते हैं। पेरेंट्स पैसे के बारे में बात नहीं करते। बचपन से पैसों का महत्व नहीं बताते। बच्चे में सेविंग की आदत नहीं डालते। नॉर्मल है दोस्तों से तुलना करना-बच्चे अपने आसपास के लोगों को देखकर सीखते हैं। अगर किसी दोस्त के पास नया वीडियो गेम, महंगा बैग या नई साइकिल है, तो बच्चे में उसकी चाह जगना स्वाभाविक है। लेकिन यहां माता-पिता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। अगर पेरेंट्स हर तुलना का जवाब नई चीजें खरीदकर देते हैं तो बच्चा पैसे की वैल्यू नहीं समझ पाता। आप उसे प्यार से समझा सकती हैं- 'हर परिवार की जरूरतें और प्राथमिकताएं अलग होती हैं।' 'किसी के पास ज्यादा चीजें हों तो जरूरी नहीं कि वह ज्यादा खुश होगा।' 'हम जो खरीदते हैं, उसके बारे में सोच-समझकर फैसला करते हैं।' इससे धीरे-धीरे बच्चा समझने लगता है कि तुलना जीवन का सही पैमाना नहीं है। पैसे की वैल्यू की शुरुआत घर से- अक्सर पेरेंट्स बच्चों से पैसों के बारे में बात करने से बचते हैं। उन्हें लगता है कि बच्चा अभी छोटा है। लेकिन सच यह है कि पैसे के बारे में सीखने की सबसे सही उम्र यही है। बच्चे को यह समझाना जरूरी है कि पैसा पेड़ पर नहीं उगता, बल्कि मेहनत से कमाया जाता है। उदाहरण के लिए आप उससे कह सकती हैं- 'पापा-मम्मी रोज काम करते हैं, तभी घर की जरूरतें पूरी होती हैं।' 'हमें अपनी कमाई को सोच-समझकर खर्च करना पड़ता है।' ध्यान रखें कि बातचीत का उद्देश्य बच्चे को डराना नहीं, बल्कि उसे जिम्मेदारी समझाना होना चाहिए। जरूरत और इच्छा का फर्क:-बच्चे को जरूरत और इच्छा का फर्क समझाने के लिए एक आसान-सी एक्टिविटी करें। किसी दिन उसके साथ 10-15 मिनट बैठें और एक कागज पर दो कॉलम बनाएं– 'जरूरत' और 'इच्छा'। फिर उससे कहें कि रोजमर्रा की चीजों को इन दोनों कॉलम में बांटे। 1. पहले बच्चे से पूछें- किसी भी चीज का फैसला आप खुद न करें। उसे सोचने का मौका दें कि वह चीज किस कैटेगरी में आती है। 2. हर जवाब की वजह पूछें- अगर वह किसी महंगे जूते को 'जरूरत' कहता है, तो पूछें, 'क्या तुम्हारे पास पहनने के लिए जूते नहीं हैं, या तुम्हें सिर्फ नया डिजाइन पसंद है?' 3. जरूरत और इच्छा का फर्क- बच्चे को बताएं कि जरूरत वे चीजें हैं, जिनके बिना काम नहीं चल सकता। इच्छा वे चीजें हैं, जिनके बिना भी काम चल सकता है या जिन्हें बाद में भी खरीदा जा सकता है। 4. शॉपिंग एक्टिविटी- खरीदारी के समय भी यही तरीका अपनाएं। जब भी बच्चा कोई नई चीज मांगे, उससे पहले पूछें- 'यह जरूरत है या इच्छा?' इससे वह खुद धीरे-धीरे सोच-समझकर फैसला लेना सीखेगा।

मानसून में बढ़ रहे कीड़े और कॉकरोच,10 सावधानी रखेंगे तो कीड़े नहीं आएंगे,जानें 7 घरेलू उपाय

जयपुर। गर्मी के बाद बारिश का मौसम राहत लेकर आता है, लेकिन इस मौसम में नमी और सीलन बढ़ती है और जगह-जगह पानी जमा हो जाता है। कीड़ों के पनपने के लिए ये स्थितियां अनुकूल हैं। यही कारण है कि बारिश में घरों में कीड़े, कॉकरोच और मच्छर भी बढ़ जाते हैं। अगर किचन और घर की साफ-सफाई पर ध्यान न दिया जाए, तो ये मच्छर और कॉकरोच तेजी से फैल सकते हैं। इससे सिर्फ गंदगी ही नहीं होती, बल्कि फूड कंटैमिनेशन और कई तरह के संक्रमण का रिस्क भी बढ़ जाता है। इसलिए आज खबर' में मानसून में बढ़ते मच्छरों और कीड़ों की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- किन गलतियों से घर में कीड़े-कॉकरोच बढ़ते हैं? इनसे बचाव के आसान और घरेलू तरीके क्या हैं? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट: तौफीक मजूमदार, मैनेजिंग डायरेक्टर, PQGS पेस्ट कंट्रोल, बेंगलुरु, डॉ. रोहित शर्मा, कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मानसून में कीड़े और कॉकरोच क्यों बढ़ जाते हैं? जवाब- इसकी कई वजहें होती हैं। इन्हें पॉइंटर्स में समझिए- मानसून में नमी, हल्की गर्मी और सीलन होती है। यह कीड़ों-मच्छरों के पनपने के लिए अनुकूल है। बारिश के दौरान नालों, बिलों, दरारों और मिट्टी के अंदर पानी भर जाता है। इसलिए कीड़े अपने प्राकृतिक ठिकानों से निकलकर सुरक्षित जगह की तलाश में घरों में आ जाते हैं। घर के किचन, बाथरूम और सीलन वाले कोनों में इन्हें भोजन, पानी और छिपने की सुरक्षित जगह मिल जाती है। इस मौसम में कचरा और बचा हुआ खाना जल्दी सड़ता है, जिसकी गंध भी कीड़े-मकोड़ों और कॉकरोचों को आकर्षित करती है। सवाल- कौन-कौन से कीड़े मानसून में ज्यादा दिखते हैं? जवाब- मानसून में नमी और पानी जमा होने की वजह से कई तरह के कीड़े तेजी से पनपते हैं। मानसून में बढ़ता इन कीड़ों का प्रकोप:- मच्छर, कॉकरोच, चींटियां, मक्खियां, दीमक, मकड़ी, सिल्वरफिश, कनखजूरा। सवाल- किन फूड्स से कॉकरोच और कीड़े सबसे ज्यादा आकर्षित होते हैं? जवाब- वे ऐसे फूड्स की ओर ज्यादा आकर्षित होते हैं, जिनमें नमी, तेल, तेज गंध या मीठापन हो, जैसेकि- चीनी, गुड़, शहद, सिरप और मिठाइयां। बचा हुआ तला-भुना, ऑयली और मसालेदार भोजन। कटे या ज्यादा पके फल-सब्जियां। खुले में रखा पालतू जानवरों का भोजन। खुली ब्रेड, आटा, चावल और दूसरे अनाज। कूड़ेदान में पड़े खाने के अवशेष। कॉकरोच और दूसरे कीड़े मीठे, स्टार्च वाले और जल्दी सड़ने वाले खाने की ओर आकर्षित होते हैं। बचा हुआ खाना और गीला कचरा इनके पनपने के लिए अनुकूल माहौल बनाते हैं। इससे फूड कंटैमिनेशन और संक्रमण का रिस्क बढ़ता है। सवाल- ये कीड़े और कॉकरोच क्या सिर्फ गंदे घरों में ही आते हैं? जवाब- नहीं, उन्हें मुख्य रूप से भोजन, पानी और छिपने की जगह चाहिए। ये तीनों चीजें साफ घरों में भी मिल सकती हैं। हालांकि, गंदगी, खुले में रखा खाना और जमा कचरा उनके लिए ज्यादा अनुकूल है। सवाल- क्या एसी या कूलर चलाने से कीड़े कम होते हैं?

जवाब- ऐसा जरूरी नहीं है। एसी या कूलर, दोनों का कीड़ों पर अलग-अलग असर होता है। एसी कमरे की नमी और तापमान कम करता है, जो कुछ कीड़ों के लिए अनुकूल माहौल नहीं है। कूलर में पानी इस्तेमाल होता है। इससे कमरे में नमी बढ़ सकती है, जो कुछ कीड़ों, खासकर मच्छरों के लिए अनुकूल है। अगर कूलर की नियमित सफाई न हो और पानी न बदला जाए, तो उसमें कीड़े पनपने का रिस्क भी हो सकता है। सवाल- कॉकरोच और कीड़ों से कौन-सी बीमारियां या इन्फेक्शन हो सकते हैं? जवाब- ये कई तरह के बैक्टीरिया, वायरस और एलर्जेंस अपने साथ लेकर चलते हैं। ये खाने-पीने की चीजों को दूषित कर सकते हैं और सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से कई बीमारियों का कारण बन सकते हैं। बारिश के कीड़े फैलाते ये बीमारियां:- गैस्ट्रोएंटेराइटिस, टाइफाइड, फूड पॉइजनिंग, एलर्जी और अस्थमा ट्रिगर, डायरिया, स्किन इन्फेक्शन, पैरासाइट इन्फेक्शनआंख-कान में इन्फेक्शन, पेट में कीड़े, गैस्ट्रोएंटेराइटिस पेट और आंतों का इन्फेक्शन। सवाल- हमारी किन गलतियों के कारण घर में कीड़े और कॉकरोच आते हैं? जवाब- मानसून में कुछ गलतियां घर में कीड़े और कॉकरोच बढ़ा सकती हैं, जैसेकि- किचन, सिंक और बाथरूम में नमी रहना। कचरा और बचा हुआ खाना खुला छोड़ना। दीवारों, दरवाजों और खिड़कियों में दरारें होना। ड्रेनेज और नालियों की सफाई न करना। पुराना सामान और गंदगी जमा रखना। बाल्टी, कूलर और गमलों में पानी जमा होना। रात में बेवजह लाइट जलाए रखना। ये सभी स्थितियां कीड़ों को भोजन, नमी, छिपने की जगह और घर में प्रवेश का रास्ता देती हैं। सवाल- कीड़े घर में सबसे ज्यादा किन रास्तों से घुसते हैं? जवाब- ये आमतौर पर घर में नालियों और दरारों से प्रवेश करते हैं। इसके अलावा इन जगहों से घुस सकते हैं- दरवाजों और खिड़कियों से। दीवारों के क्रैक से। पाइपलाइन और ड्रेनेज के गैप से। बाथरूम और किचन सिंक के नीचे से। वेंटिलेशन के रास्ते से। एग्जॉस्ट फैन के आसपास की खाली जगह से। सवाल- मानसून में घर में कीड़े और कॉकरोच आने से कैसे रोकें? जवाब- अगर समय रहते कुछ बेसिक सावधानियां रखी जाएं, तो इनके प्रवेश को काफी हद तक रोका जा सकता है। किचन साफ-सूखा रखें। कचरा रोज बाहर निकालें। डस्टबिन ढककर रखें। डस्टबिन रोज खाली करें। ड्रेनेज पाइप की सफाई रखें। दरारें और छेद सील करें। खिड़कियों पर जाली लगाएं। फूड कंटेनर एयरटाइट रखें। घर में अच्छा वेंटिलेशन रखें। अनावश्यक लाइट्स बंद रखें। सवाल- क्या ज्यादा इनसेक्ट स्प्रे यूज करना नुकसानदायक हो सकता है? जवाब- हां, इसे पॉइंटर्स से समझिए- स्प्रे में मौजूद केमिकल (कीटनाशक) के लगातार संपर्क से सांस लेने में तकलीफ, एलर्जी, स्किन में जलन और सिरदर्द जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

जोकोविच विंबलडन सेमीफाइनल हारे, 25वां ग्रैंडस्लैम जीतने का सपना भी टूटा,15 साल छोटे सिनर ने सीधे सेटों में हराया

लंदन। 39 साल के दिग्गज टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच का 25वां ग्रैंड स्लैम जीतने का सपना एक बार फिर टूट गया है। वे विंबलडन टेनिस चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में खुद से 15 साल छोटे 24 साल के जैनिक सिनर से सीधे सेटों में हार गए। सर्बिया के जोकोविच ने पिछला ग्रैंड स्लैम 3 साल पहले 2023 में जीता था। तब वे यूएस ओपन में चैंपियन बने थे। लंदन के ऑल इंग्लैंड क्लब में शुक्रवार को इटली के सिनर ने जोकोविच को 6-4, 6-4, 6-4 से हराया। वे लगातार दूसरे साल फाइनल में पहुंचे हैं। वर्ल्ड नंबर-1 सिनर ने पिछले साल स्पेन के कार्लोस अल्काराज को हराया था। इस बार सिनर का मुकाबला रविवार को जर्मनी के अलेक्जेंडर ज्वेरेव से होगा। एक भी सेट नहीं जीत सके जोकोविच:-सिनर ने सेमीफाइनल मुकाबले में आक्रामक खेल दिखाया। उन्होंने जोकोविच को लगातार तीन सेटों में 2 घंटे 20 मिनट चले मैच में मात दी। इस जीत के साथ सिनर इस साल ऑस्ट्रेलियन ओपन के सेमीफाइनल में मिली 5 सेटों की हार का भी बदला ले लिया। जोकोविच अब तक 24 ग्रैंड स्लैम जीत चुके हैं। वे 25वें टाइटल की तलाश में उतरे थे, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। उन्हें साल की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया ओपन के फाइनल में स्पेन के कार्लोस अल्काराज ने हराया था। फ्रेंच ओपन में वे तीसरे राउंड से बाहर हो गए थे। जर्मनी के ज्वेरेव पहली बार विंबलडन फाइनल में:-जेंटलमेन सिंगल्स कैटेगरी के पहले सेमीफाइनल में जर्मनी के अलेक्जेंडर ज्वेरेव ने ब्रिटेन के वाइल्ड कार्ड खिलाड़ी आर्थर फेरी को 7-6, 6-2, 6-4 से हराया। ज्वेरेव पहली बार विंबलडन के फाइनल में पहुंचे हैं। 29 साल के ज्वेरेव 1995 के बाद विंबलडन फाइनल में पहुंचने वाले पहले जर्मन खिलाड़ी बने हैं। साथ ही वे फ्रेंच ओपन जीतने के बाद अगले ही ग्रैंड स्लैम के फाइनल में पहुंचने वाले ओपन एरा के तीसरे खिलाड़ी भी बन गए। उन्होंने पूरे टूर्नामेंट में अब तक सिर्फ दो सेट गंवाए हैं। सचिन, गिल और लारा ने रॉयल बॉक्स से मैच देखा, फेडरर से मिले:-सेंटर कोर्ट के रॉयल बॉक्स में भारतीय दिग्गज सचिन तेंदुलकर, टेस्ट कप्तान शुभमन गिल, वेस्टइंडीज के ब्रायन लारा और फुटबॉलर वर्जिल वान डाइक समेत कई खेल सितारे मौजूद रहे। विंबलडन ने सचिन का स्वागत करते हुए उन्हें क्रिकेट रॉयल्टी बताया। करीब 80 सीटों वाली यह दीर्घा 1922 से विम्बलडन की परंपरा का हिस्सा है। यह दुनिया के उन चुनिंदा स्थानों में है, जहां बैठना एक सुविधा नहीं, बल्कि सम्मान माना जाता है। रॉयल बॉक्स की सबसे बड़ी खासियत इसकी चयन प्रक्रिया है। यहां बिक्री के लिए कोई टिकट उपलब्ध नहीं होती। मेहमानों का चयन ऑल इंग्लैंड लॉन टेनिस क्लब के चेयरमैन खुद करते हैं। फेडरर से मिले तेंदुलकर, गिल और अंजलीः-इस दौरान दिग्गज क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर, भारत के टेस्ट कप्तान शुभमन गिल और अंजली तेंदुलकर ने टेनिस के लीजेंड रोजर फेडरर से मुलाकात की। तेंदुलकर ने सोशल प्लेटफार्म एक्स पर मुलाकात की फोटो पोस्ट कर लिखा- 'कुछ रैलियां कभी खत्म नहीं होतीं, जैसे हमारी दोस्ती। रोजर आपके साथ समय बिताना हमेशा अच्छा लगता है। फिर मिलेंगे।' लेडीज सिंगल्स कैटेगरी का फाइनल आज, मुचोवा-नोस्कोवा में मैचः-शनिवार रात 8:30 बजे से चेक रिपब्लिक की 2 प्लेयर्स के बीच लेडीज सिंगल्स कैटेगरी का फाइनल मैच खेला जाएगा। सेंटर कोर्ट पर होने वाले इस मुकाबले में कैरोलिना मुचोवा और लिंडा नोस्कोवा आमने-सामने होंगी।

स्पेन पहुंचा फुटबॉल वर्ल्डकप के सेमीफाइनल में, बेल्जियम पर भारी पड़ी गोलकीपर लामेन्स की गलती, मेरिनो ने फ़ाइनल गोल दागा

इंगलवुड। 2010 की चैंपियन स्पेन फुटबॉल वर्ल्ड कप 2026 के सेमीफाइनल में पहुंच गई है। उसने शुक्रवार रात दूसरे दूसरा क्वार्टर फाइनल में बेल्जियम को 2-1 से हराया। अब उसका सामना फ्रांस से होगा। यह मैच 14 जुलाई की रात 12:30 बजे खेला जाएगा। लॉस एंजिल्स स्टेडियम में स्पेन और बेल्जियम का मुकाबला 87 मिनट तक 1-1 से बराबरी पर था। 88वें मिनट में सब्स्टीट्यूट खिलाड़ी मिकेल मेरिनो ने विजयी गोल दागा। स्पेन के पाउ क्यूबार्सी की किक बेल्जियम के रिजर्व गोलकीपर सेने लामेन्स के हाथ से छूट गई। मेरिनो ने रिबाउंड पर गोल कर दिया। स्पेन की टीम वर्ल्ड कप इतिहास में तीसरी बार सेमीफाइनल में पहुंची है। उसने पिछली बार 2010 में इस दौर में जगह बनाई थी। उस एडीशन में स्पेन ने नीदरलैंड को 1-0 से हराकर पहला खिताब जीता था। मैच में खास:-चार्ल्स डी केटेलेरे ने स्पेन के गोलकीपर उनाई सिमोन के लगातार 650 मिनट तक गोल नहीं खाने का सिलसिला तोड़ दिया। सिमोन ने सबसे ज्यादा समय तक गोल नहीं खाने का रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने इटली के दिग्गज गोलकीपर वाल्टर जेंगा का 517 मिनट का रिकॉर्ड तोड़ा था। स्पेन लगातार 36 इंटरनेशनल मैच से अजेय है। टीम को पिछली हार 2023 में कोलंबिया से मिली थी। उसने 2019-22 के बीच अर्जेंटीना के लगातार 36 मैच अजेय रहने के रिकॉर्ड की बराबरी की है। वह इटली के लगातार 37 जीत के रिकॉर्ड से एक जीत पीछे है। मेरिनो ने लगातार दूसरे मैच में निर्णायक गोल किया मिकेल मेरिनो लगातार दूसरे नॉकआउट मैच में स्पेन के मैच विनर साबित हुए। उन्होंने प्री-क्वार्टर फाइनल में पुर्तगाल के खिलाफ इंजरी टाइम में विजयी गोल किया था। बेल्जियम के खिलाफ 86वें मिनट में मैदान पर उतरने के दो मिनट बाद ही उन्होंने निर्णायक गोल दाग दिया। वह टीम के सबसे भरोसेमंद इम्पैक्ट खिलाड़ी साबित हुए हैं। जनवरी 2026 में मैनचेस्टर यूनाइटेड के खिलाफ मैच के दौरान मेरिनो के दाएं पैर में स्ट्रेस फ्रैक्चर हो गया था। चोट गंभीर थी और उन्हें सर्जरी करानी पड़ी। करीब चार महीने के रिहैबिलिटेशन के बाद उन्होंने वर्ल्ड कप टीम में वापसी की। स्पेन ने इस वर्ल्ड कप में पहला गोल खायाः-स्पेन ने 30वें मिनट में फाबियन रुइज के गोल से बढ़त बनाई। बेल्जियम ने 11 मिनट बाद ही चार्ल्स डी केटेलेरे के गोल से गोलकीपर कोर्टुआ चोटिल हुए, रिजर्व गोलकीपर पर बढ़ा दबावः- बेल्जियम के अनुभवी गोलकीपर थिबाउ कोर्टुआ 71वें मिनट में जांघ की चोट के कारण मैदान छोड़ने को मजबूर हुए। उनकी जगह आए सेने लामेन्स निर्णायक क्षण में बॉल नहीं संभाल सके, जिसका स्पेन ने फायदा उठाया। यूरोप की 2 सबसे मजबूत टीमें में सेमीफाइनलः-स्पेन और फ्रांस मौजूदा दौर की सबसे मजबूत यूरोपीय फुटबॉल टीमों में गिनी जाती हैं। स्पेन तेज पासिंग और बॉल पजेशन के लिए जाना जाता है। फ्रांस की ताकत तेज काउंटर अटैक और मजबूत फॉरवर्ड लाइन है। ऐसे में सेमीफाइनल को टूर्नामेंट का सबसे बड़ा मुकाबला माना जा रहा है।

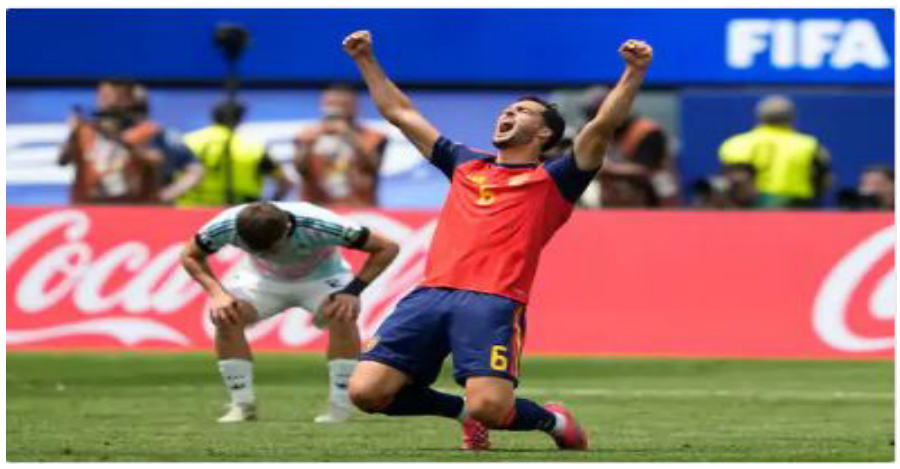

अरशद वारसी ने मरती हुई मां को नहीं पिलाया पानी-आज भी पछताते हैं, कभी बेची लिपस्टिक

मुंबई। 14 साल की उम्र में अरशद वारसी ने ऐसा दर्द देखा, जिसने उन्हें वक्त से पहले बड़ा बना दिया। डॉक्टर की सलाह पर उन्होंने मां को पानी नहीं दिया था और कुछ घंटों बाद उनका निधन हो गया। इस बात का मलाल उन्हें आज भी है। माता-पिता

के निधन के बाद घर की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई और उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा। उन्होंने बसों और घर-घर जाकर लिपस्टिक बेची, फोटो लैब में नौकरी की और छोटे-छोटे काम करके गुजारा किया। हालात इतने मुश्किल थे कि कई बार भविष्य अंधेरे में नजर आता था। लेकिन इसी संघर्ष ने उन्हें ऐसा कलाकार बनाया, जिसने 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' के 'सर्किट' बनकर करोड़ों लोगों का दिल जीता। उन्हें भी इस किरदार की इतनी बड़ी सफलता की उम्मीद नहीं थी। बचपन में खुशहाल जिंदगी, फिर सब कुछ बदल गया-19 अप्रैल 1968 को मुंबई में जन्मे अरशद वारसी का शुरुआती बचपन आर्थिक रूप से अच्छा था। उनके पिता अहमद अली खान वारसी शायर और गायक थे। परिवार का जीवन आरामदायक था, लेकिन समय के साथ हालात बिगड़ने लगे। कानूनी विवादों और आर्थिक नुकसान के कारण परिवार की संपत्ति चली गई। बड़ा घर छोड़कर उन्हें छोटे घरों में रहना पड़ा। 14 साल की उम्र में अनाथ हो गएः-अरशद की जिंदगी का सबसे बड़ा झटका तब लगा, जब उन्होंने कम उम्र में अपने माता-पिता को खो दिया। राज शमानी के पॉडकास्ट में उन्होंने बताया कि वह सिर्फ 14 साल के थे, जब उनके सिर से माता-पिता का साया उठ गया। इस घटना ने उन्हें उम्र से पहले जिम्मेदार बना दिया। अरशद ने कहा था- 'मैं अपनी उम्र के हिसाब से काफी मैच्योर हो गया था। पिताजी के जाने के बाद हालात लगातार खराब होते गए। मां के निधन के बाद मैं तुरंत रो भी नहीं पाया, क्योंकि मुझे लगा कि अब सब कुछ मुझे ही संभालना है। कई हफ्तों बाद मैं टूटकर रोया।' मां की आखिरी याद आज भी नहीं भूलेः-अरशद ने बताया कि उनकी मां साधारण गृहिणी थीं और बहुत अच्छा खाना बनाती थीं। उन्हें किडनी फेल होने की बीमारी हो गई थी, इसलिए नियमित डायलिसिस कराना पड़ता था। इलाज के दौरान डॉक्टरों ने सख्त हिदायत दी थी कि उन्हें पानी नहीं देना है। लेकिन उनकी मां बार-बार पानी मांगती थीं और अरशद ने डॉक्टरों की सलाह मानते हुए हर बार मना कर दिया। उन्होंने कहा कि निधन से ठीक पहले वाली रात मां ने उन्हें बुलाकर पानी मांगा था, लेकिन उन्होंने पानी नहीं दिया। उसी रात उनकी मां का निधन हो गया। अरशद के मुताबिक, यह घटना आज भी उन्हें अंदर तक झकझोर देती है। उन्होंने कहा कि उस समय उन्हें लगता था कि अगर उन्होंने मां को पानी पिला दिया और उसके बाद उनका निधन हो गया, तो पूरी जिंदगी खुद को जिम्मेदार मानते। अब उन्हें लगता है कि शायद मां की आखिरी इच्छा पूरी कर देनी चाहिए थी। उनका मानना है कि कई बार परिवार वाले मरीज की इच्छा से ज्यादा अपने अपराधबोध के आधार पर फैसले लेते हैं। आर्थिक तंगी के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ी, बेची लिपस्टिकः-माता-पिता के निधन के बाद घर चलाने की जिम्मेदारी अरशद के कंधों पर आ गई। आर्थिक संकट इतना गहरा था कि उन्हें दसवीं के बाद पढ़ाई छोड़नी पड़ी। गुजारा करने के लिए उन्होंने कई छोटे-मोटे काम किए। उन्होंने कॉस्मेटिक्स कंपनी में डोर-टू-डोर सेल्समैन के तौर पर काम किया। कई रिपोर्टों के मुताबिक वे मुंबई की बसों में लिपस्टिक और कॉस्मेटिक उत्पाद भी बेचते थे। अरशद वारसी कहते हैं, 'मैं घर-घर जाकर लिपस्टिक बेचता था। कई लोग दरवाजा बंद कर देते थे, लेकिन उसी दौर ने मुझे लोगों से बात करना और जिंदगी का सामना करना सिखाया।' उन्होंने बताया कि उस दौर में वह सप्ताहभर मेहनत करके कुछ सौ रुपए ही कमा पाते थे, जबकि मां के इलाज पर हर सप्ताह लगभग 800 रुपए खर्च हो जाते थे। उन्होंने कहा, 'मैं

वीकेंड पर म्यूजिकल शो करता था, जिसके 175 रुपए मिलते थे। तभी मुझे समझ आया कि जिंदगी में आर्थिक रूप से मजबूत होना कितना जरूरी है।' अरशद वारसी (एक्टर):- 'मैंने जिंदगी में बहुत कुछ देखा है। शायद इसलिए आज छोटी-छोटी चीजों की भी कद्र करता हूं।' डांस ने बदली जिंदगीः-संघर्ष के बीच अरशद का डांस का शौक कभी नहीं छूटा। उन्हें बचपन से नृत्य में रुचि थी। धीरे-धीरे उन्होंने डांस को ही करियर बनाने का फैसला किया। डांस के प्रति जुनून ने उनकी जिंदगी बदल दी। वे अकबर सामी के डांस ग्रुप से जुड़े। 1991 में ऑल इंडिया डांस प्रतियोगिता जीती और 1992 में अरशद ने डॉक्टरों की सलाह मानते हुए हर बार मना कर दिया। उन्होंने कहा कि निधन से ठीक पहले वाली

रात मां ने उन्हें बुलाकर पानी मांगा था, लेकिन उन्होंने पानी नहीं दिया। उसी रात उनकी मां का निधन हो गया। अरशद के मुताबिक, यह घटना आज भी उन्हें अंदर तक झकझोर देती है। उन्होंने कहा कि उस समय उन्हें लगता था कि अगर उन्होंने मां को पानी पिला दिया और उसके बाद उनका निधन हो गया, तो पूरी जिंदगी खुद को जिम्मेदार मानते। अब उन्हें लगता है कि शायद मां की आखिरी इच्छा पूरी कर देनी चाहिए थी। उनका मानना है कि कई बार परिवार वाले मरीज की इच्छा से ज्यादा अपने अपराधबोध के आधार पर फैसले लेते हैं। आर्थिक तंगी के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ी, बेची लिपस्टिकः-माता-पिता के बाद उन्होंने डांस स्टूडियो शुरू किया और फिल्मों में कोरियोग्राफी करने लगे। उन्होंने 'रूप की रानी चोरों का राजा' के टाइटल ट्रैक के अलावा 'ठिकाना' और 'काश' जैसी फिल्मों में भी कोरियोग्राफी की। यहीं से उनकी जिंदगी ने नया मोड़ लिया। जया बच्चन की नजर पड़ी, मिल गया पहला मौकाः- कोरियोग्राफर के रूप में काम करते समय उनकी मुलाकात कई फिल्मी हस्तियों से हुई। इसी दौरान जया बच्चन ने उनकी प्रतिभा देखकर अमिताभ बच्चन कॉरपोरेशन लिमिटेड (एबीसीएल) की फिल्म 'तेरे मेरे सपने' में अभिनय का मौका दिया। 1996 में रिलीज हुई 'तेरे मेरे सपने' से अरशद वारसी ने बतौर अभिनेता बॉलीवुड में कदम रखा। फिल्म अमिताभ बच्चन कॉरपोरेशन लिमिटेड (एबीसीएल) के बैनर तले बनी थी और निर्देशक जॉय ऑगस्टीन थे। इससे पहले वह बतौर कोरियोग्राफर पहचान बना चुके थे। उनकी एंट्री किसी फिल्मी परिवार की वजह से नहीं, बल्कि प्रतिभा के दम पर हुई। अरशद ने कहा था कि वह अमिताभ बच्चन, जया बच्चन और जॉय ऑगस्टीन के आभारी रहेंगे, जिन्होंने उन पर भरोसा किया। पहली फिल्म के बाद नहीं मिला मनचाहा कामः-'तेरे मेरे सपने' के बाद अरशद को लगा था कि उनके करियर की रफ्तार तेज होगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अगले कुछ वर्षों में उन्होंने 'हीरो हिंदुस्तानी', 'होगी प्यार की जीत', 'मुझे मेरी बीवी से बचाओ', 'जानी दुश्मनः एक अनोखी कहानी' समेत कई फिल्मों में काम किया, लेकिन अधिकांश फिल्में बॉक्स ऑफिस पर अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर सकीं। इस दौरान अच्छे किरदार भी कम मिले और उन्हें लगा कि इंडस्ट्री में खुद को दोबारा साबित करना पड़ रहा है। आउटसाइडर होने की कीमत चुकानी पड़ीः-द इंडियन एक्सप्रेस को दिए इंटरव्यू में अरशद वारसी ने फिल्म इंडस्ट्री में बाहरी कलाकारों के संघर्ष पर बात की थी। उन्होंने कहा था- 'इंडस्ट्री का एक वर्ग ऐसा है, जिसे हिट फिल्म देने के लिए कई मौके मिलते हैं। लेकिन जो फिल्मी परिवार से नहीं आते, उनके लिए एक फ्लॉप के बाद फिर से संघर्ष शुरू हो जाता है।' अरशद ने कहा कि समय के साथ उन्होंने इस सच्चाई को स्वीकार कर लिया और शिकायत करने के बजाय अपने काम पर ध्यान देना चुना। लगा था 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' आखिरी फिल्म साबित होगीः-2003 में जब निर्देशक राजकुमार हीरानी ने उन्हें 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' में 'सर्किट' का रोल ऑफर किया, तब अरशद को लगा कि यह उनके करियर की आखिरी फिल्म साबित हो सकती है। उन्हें यकीन नहीं था कि सर्किट का किरदार इतना लोकप्रिय हो जाएगा। अरशद वारसी कहते हैं- 'मुझे पूरा यकीन था कि 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' के बाद मेरा करियर खत्म हो जाएगा। मुझे लगा था कि यह रोल बहुत छोटा है और इससे मुझे कोई फायदा नहीं होगा।' उन्होंने बताया कि उस समय संजय दत्त भी फिल्म की सफलता को लेकर पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे। 'सर्किट' का रोल शुरुआत में पसंद नहीं आया थाः-अरशद वारसी कहते हैं, 'अगर आप सिर्फ किरदार को देखें, तो वह बहुत बड़ा रोल नहीं था। अगर फिल्म नहीं चलती, तो उस किरदार का कोई मतलब नहीं रह जाता।' उन्होंने 'सर्किट' को 'God-given role' बताते हुए कहा कि उनकी किस्मत अच्छी थी कि फिल्म सुपरहिट हुई और दर्शकों ने सर्किट और मुन्ना भाई की जोड़ी को दिल से अपनाया। सर्किट का नाम पहले खुजली थाः-कम लोग जानते हैं कि 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' में सर्किट का किरदार पहले अलग था। उसका नाम 'खुजली' रखा गया था। अरशद वारसी ने राजकुमार हीरानी से नाम बदलने का सुझाव दिया। उन्होंने किरदार के कपड़े, हेयरस्टाइल और कई दृश्यों में भी अपने सुझाव दिए। यही बदलाव आगे चलकर 'सर्किट' की पहचान बन गए। लोग नाम नहीं, 'सर्किट' कहकर बुलाने लगेः-'मुन्ना भाई एमबीबीएस' की सफलता के बाद लोग अरशद वारसी को उनके असली नाम से कम और 'सर्किट' के नाम से ज्यादा पहचानने लगे। द इंडियन एक्सप्रेस से बातचीत में उन्होंने बताया कि लद्दाख में बाइक ट्रिप के दौरान एक व्यक्ति ने कहा कि उनकी शक्ल अरशद वारसी जैसी लगती है और उन्हें उनकी मिमिक्री करके पैसे कमाने चाहिए। अरशद ने अपनी पहचान नहीं बताई और इस घटना का आनंद लिया। 'लगे रहो मुन्नाभाई' ने बनाई स्थायी पहचानः-2006 में आई 'लगे रहो मुन्नाभाई' ने सर्किट के किरदार को और लोकप्रिय बना दिया। इसके बाद अरशद वारसी सिर्फ कॉमेडी अभिनेता नहीं रहे, बल्कि बहुमुखी कलाकार के रूप में पहचान बनाई। उन्होंने 'गोलमाल' सीरीज, 'धमाल', 'इश्किया' और 'जॉली एलएलबी' जैसी फिल्मों से अपनी अभिनय क्षमता साबित की। 'गोलमाल' ने बनाया कॉमेडी का बड़ा चेहराः-रोहित शेट्टी की 'गोलमाल' सीरीज में अरशद वारसी ने माधव का किरदार निभाया। अजय देवगन, तुषार कपूर और श्रेयस तलपड़े जैसे कलाकारों के बीच भी उनकी कॉमिक टाइमिंग ने दर्शकों का ध्यान खींचा। इसके बाद 'धमाल', 'डबल धमाल' और 'टोटल धमाल' जैसी फिल्मों ने उन्हें हिंदी सिनेमा के भरोसेमंद कॉमेडी अभिनेताओं में शामिल कर दिया। हालांकि, अरशद हमेशा कहते रहे कि वे सिर्फ कॉमेडी अभिनेता बनकर नहीं रहना चाहते। 'इश्किया' और 'जॉली एलएलबी' में दिखाया अलग रंगः-विशाल भारद्वाज की 'इश्किया' में 'बब्बन' और 'जॉली एलएलबी' में संघर्षरत वकील जगदीश (जॉली) त्यागी के किरदार ने साबित कर दिया कि अरशद सिर्फ हंसाने वाले अभिनेता नहीं हैं। इन फिल्मों में उनके गंभीर अभिनय को सराहा गया। बाद में उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसे किरदार पसंद आते हैं, जिनमें कई परतें हों और अभिनेता के तौर पर कुछ नया करने का मौका मिले। वेब सीरीज 'असुर' से मिली नई पहचानः-2020 में आई वेब सीरीज 'असुर' अरशद वारसी के करियर का बड़ा मोड़ साबित हुई। इसमें उन्होंने फॉरेंसिक विशेषज्ञ धनंजय राजपूत का किरदार निभाया। यह भूमिका उनके पहले के कॉमिक किरदारों से बिल्कुल अलग थी। इस सीरीज के बारे में अरशद ने बताया था- दो वजहों से मैंने 'असुर' की। पहली, इसकी कहानी बेहद शानदार और अप्रत्याशित थी। दूसरी, यह कॉमिक किरदार नहीं था। यह एक गंभीर, जटिल और कई परतों वाला किरदार था, जैसा काम मुझे कम मिलता है।सीरीज की सफलता के बाद दर्शकों ने उन्हें गंभीर अभिनेता के रूप में भी स्वीकार किया। अरशद वारसी मानते हैं कि ओटीटी प्लेटफॉर्म ने उनकी छवि बदलने में बड़ी भूमिका निभाई। वह कहते हैं- मुझे खुशी है कि अब लोग मुझे सिर्फ कॉमेडियन नहीं मानते। मैंने हमेशा अलग-अलग तरह के किरदार करने की कोशिश की और अब लोग उसे पहचान रहे हैं। हाल ही में अरशद वारसी की वेब सीरीज 'प्रीतम एंड पेड्रो' जियो हॉटस्टार पर स्ट्रीम हुई है। उनकी फिल्म वेलकम टू द जंगल सिनेमाघरों में हाल ही रिलीज हुई है। इसके अलावा वह शाहरुख खान की फिल्म 'किंग' और गोलमाल 5 में नजर आएंगे। तीन दशक बाद भी लगातार सक्रियः-करीब तीन दशक लंबे करियर में अरशद वारसी ने 50 से अधिक फिल्मों और कई वेब सीरीज में काम किया है। उन्होंने कभी फिल्मों की संख्या के पीछे भागने के बजाय अपनी पसंद की स्क्रिप्ट को प्राथमिकता दी। अरशद वारसी कहते हैं कि उन्हें कम काम करना मंजूर है, लेकिन ऐसा काम नहीं करना चाहते, जिसमें उन्हें खुद विश्वास न हो। परिवार बना सबसे बड़ी ताकतः-अरशद वारसी की निजी जिंदगी भी बैलेंस रही है। उन्होंने 1999 में मारिया गोरेटी से शादी की। दोनों की मुलाकात डांस के दिनों में हुई थी। अरशद कई मौकों पर कह चुके हैं कि संघर्ष के दिनों से लेकर सफलता तक मारिया ने हमेशा उनका साथ दिया। वे लाइमलाइट से दूर रहकर परिवार के साथ समय बिताना पसंद करते हैं और निजी जीवन को मीडिया की सुर्खियों से अलग रखते हैं।

प्रेग्नेंसी के आखिरी समय में दीपिका पादुकोण, बताया कैसी है कंडीशन, कुछ हफ्तों में होगी डिलीवरी

मुंबई। दीपिका पादुकोण इन दिनों प्रेग्नेंसी के चलते सुर्खियों में

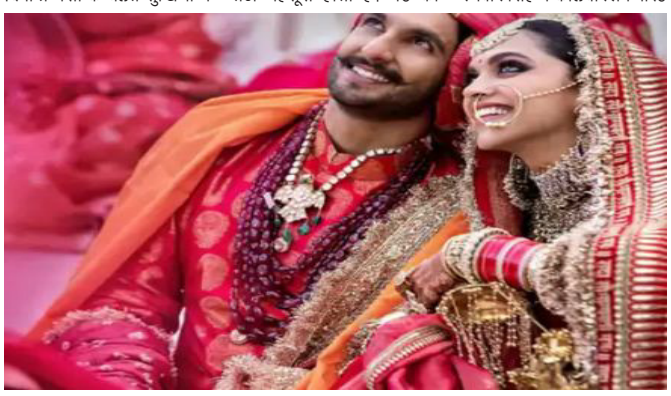

हैं। एक्ट्रेस ने अप्रैल में दूसरी प्रेग्नेंसी अनाउंस की थी, जिसके बाद अब एक्ट्रेस थर्ड ट्राइमेस्टर में पहुंच चुकी हैं। अब दीपिका ने एक मीम शेयर कर थर्ड ट्राइमेस्टर की कंडीशन बताई है। दीपिका ने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट के स्टोरी सेक्शन से एक मीम शेयर किया है, जिसमें एक महिला बाथरूम जाने के लिए जद्दोजहद करती दिख रही है। इस वीडियो के साथ लिखा हुआ है, जब आप थर्ड ट्राइमेस्टर में रात को बाथरूम यूज करने उठते हैं। स्टोरी के साथ दीपिका ने थर्ड ट्राइमेस्टर में होने की कन्फर्मेशन दे दी है, यानी एक्ट्रेस प्रेग्नेंसी का 7वां महीना पार कर चुकी हैं और कुछ ही हफ्तों में उनकी डिलीवरी हो सकती है। थर्ड ट्राइमेस्टर, गर्भावस्था का आखिरी चरण होता है। यह 28वें सप्ताह (7वें महीने की शुरुआत) से शुरू होकर डिलीवरी (आमतौर पर 37-40 सप्ताह) तक चलता है। इस समय बच्चे का सबसे तेज विकास होता है और मां का शरीर प्रसव (लेबर) की तैयारी करने लगता है। बच्चे का वजन लगभग 1-1.5 किलोग्राम तक पहुंच सकता है। आंखें खुलने-बंद होने लगती हैं। सुनने की क्षमता काफी विकसित हो जाती है। हाथ-पैरों की हरकतें तेज महसूस होती हैं। पेट का आकार काफी बढ़ जाता है। सांस फूलना, क्योंकि गर्भाशय डायाफ्राम पर दबाव डालता है। बार-बार पेशाब आना। कमर, कूल्हों और पैरों में दर्द। पैरों और टखनों में सूजन। सीने में जलन (एसिडिटी)। रात में नींद आने में परेशानी। बच्चे की किक और मूवमेंट अधिक स्पष्ट महसूस होना। अप्रैल में की थी दूसरी प्रेग्नेंसी की अनाउंसमेंटः-19 अप्रैल को दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह ने कोलेबोरेशन पोस्ट के जरिए दूसरी बार पेरेंट्स बनने की गुड न्यूज दी थी। कपल ने बेटी दुआ की पॉजिटिव प्रेग्नेंसी टेस्ट किट पकड़े.एक तस्वीर शेयर कर ये बड़ी अनाउंसमेंट की। इस पोस्ट के साथ इविल आई का कैप्शन रखा गया था। पोस्ट आने के बाद कटरीना कैफ, प्रियंका चोपड़ा, अदिति राव हैदरी, सिद्धार्थ मल्होत्रा समेत कई सेलेब्स ने कपल को बधाई दीं। इन दिनों सोशल मीडिया पर लिमिटेड पोस्ट शेयर कर रहीं दीपिका पादुकोण ने हाल ही में बेबी बंप फ्लॉन्ट किया है। उन्होंने प्रेग्नेंसी पोस्ट के बाद एक एड का वीडियो शेयर किया है, जिसमें वो बेबी बंप के साथ मस्तीभरे अंदाज में दिख रही हैं। नए घर में शिफ्ट हो सकते हैं दीपिका-रणवीरः-दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह मुंबई के बांद्रा वेस्ट में घर बनवा रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, दूसरे बच्चे की डिलीवरी के बाद कपल यहां शिफ्ट हो सकते हैं। कुछ समय पहले ही कपल घर का मुआयना करने पहुंचे थे। 2024 में बेटी दुआ का जन्म हुआ थाः-बता दें कि दीपिका और रणवीर ने 8 सितंबर 2024 को अपनी बेटी दुआ के जन्म की जानकारी दी थी। उस समय उन्होंने लिखा था, 'वेलकम बेबी गर्ल। 8-9-2024। दीपिका और रणवीर।' 21 अक्टूबर 2025 में दिवाली के खास मौके पर कपल ने पहली बार बेटी दुआ की तस्वीरें शेयर की थीं। दीपिका-रणवीर की लव स्टोरी 2013 में फिल्म 'गोलियों की रासलीला राम-लीला' के सेट से शुरू हुई थी। कई सालों तक रिश्ते में रहने के बाद दोनों ने 2018 में इटली में शादी की थी।

शादी के बाद जॉब छोड़ दी, अब सिर्फ एक पत्नी और मां हूं, अपनी खुशी भूल गई क्या करूं

नयी दिल्ली। शादी के बाद थोड़ा बहुत जीवन परिवर्तन होना तो स्वाभाविक हैं पर खुद की खुशी ही भूल जाना थोड़ा सही नहीं माना जाता विषय पर बात करेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और अभिनव को समीक्षकों ने सराहा। बाद में उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसे किरदार पसंद आते हैं, जिनमें कई परतें हों और अभिनेता के तौर पर कुछ नया करने का मौका मिले। वेब सीरीज 'असुर' से मिली नई पहचानः-2020 में आई वेब सीरीज 'असुर' अरशद वारसी के करियर का बड़ा मोड़ साबित हुई। इसमें उन्होंने फॉरेंसिक विशेषज्ञ धनंजय राजपूत का किरदार निभाया। यह भूमिका उनके पहले के कॉमिक किरदारों से बिल्कुल अलग थी। इस सीरीज के बारे में अरशद ने बताया था- दो वजहों से मैंने 'असुर' की। पहली, इसकी कहानी बेहद शानदार और अप्रत्याशित थी। दूसरी, यह कॉमिक किरदार नहीं था। यह एक गंभीर, जटिल और कई परतों वाला किरदार था, जैसा काम मुझे कम मिलता है।सीरीज की सफलता के बाद दर्शकों ने उन्हें गंभीर अभिनेता के रूप में भी स्वीकार किया। अरशद वारसी मानते हैं कि ओटीटी प्लेटफॉर्म ने उनकी छवि बदलने में बड़ी भूमिका निभाई। वह कहते हैं- मुझे खुशी है कि अब लोग मुझे सिर्फ कॉमेडियन नहीं मानते। मैंने हमेशा अलग-अलग तरह के किरदार करने की कोशिश की और अब लोग उसे पहचान रहे हैं। हाल ही में अरशद वारसी की वेब सीरीज 'प्रीतम एंड पेड्रो' जियो हॉटस्टार पर स्ट्रीम हुई है। उनकी फिल्म वेलकम टू द जंगल सिनेमाघरों में हाल ही रिलीज हुई है। इसके अलावा वह शाहरुख खान की फिल्म 'किंग' और गोलमाल 5 में नजर आएंगे। तीन दशक बाद भी लगातार सक्रियः-करीब तीन दशक लंबे करियर में अरशद वारसी ने 50 से अधिक फिल्मों और कई वेब सीरीज में काम किया है। उन्होंने कभी फिल्मों की संख्या के पीछे भागने के बजाय अपनी पसंद की स्क्रिप्ट को प्राथमिकता दी। अरशद वारसी कहते हैं कि उन्हें कम काम करना मंजूर है, लेकिन ऐसा काम नहीं करना चाहते, जिसमें उन्हें खुद विश्वास न हो। परिवार बना सबसे बड़ी ताकतः-अरशद वारसी की निजी जिंदगी भी बैलेंस रही है। उन्होंने 1999 में मारिया गोरेटी से शादी की। दोनों की मुलाकात डांस के दिनों में हुई थी। अरशद कई मौकों पर कह चुके हैं कि संघर्ष के दिनों से लेकर सफलता तक मारिया ने हमेशा उनका साथ दिया। वे लाइमलाइट से दूर रहकर परिवार के साथ समय बिताना पसंद करते हैं और निजी जीवन को मीडिया की सुर्खियों से अलग रखते हैं।

करती ही नहीं थी।' यही सबसे बड़ी गलतफहमी है। घर चलाना, बच्चों का पालन-पोषण करना और पूरे परिवार का प्रबंधन करना दुनिया के सबसे कठिन फुल-टाइम कामों में से एक है। फर्क सिर्फ इतना है कि इसके

लिए सैलरी नहीं मिलती। आपने इतने साल क्या कियाः- पूरे परिवार का मैनेजमेंट। घरेलू बजट बनाना। बच्चों की पढ़ाई। फैमिली इवेंट आयोजित करना। छोटे-मोटे बाहरी काम करना। बुजुर्गों की देखभाल। काम भी करना। जैसे बैंक जाना, बच्चों को स्कूल छोड़ना। अगर घर एक कंपनी होती या आप इतने साल घर में जो काम कर रही थीं, वही काम किसी कंपनी में कर रही होतीं तो आपकी क्या पोजिशन होती। इसलिए आपसे और सभी महिलाओं से मेरी रिक्वेस्ट है कि खुद को सिर्फ 'हाउसवाइफ' मत कहिए। असल में आप- परिवार की निर्माता हैं। होम मैनेजर हैं। सबका ख्याल रखने, देखभाल करने वाली हैं। परिवार के लिए निर्णय लेने वाली हैं। संकट में सबको संभालने वाली हैं। ये सब कोई छोटी उपलब्धियां नहीं हैं। हमें इन पर गर्व होना चाहिए। फिर भी खालीपन क्यों महसूस होता है? जब बच्चे छोटे होते हैं, तब उन्हें हर वक्त, हरेक काम के लिए आपकी जरूरत होती है। लेकिन जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं तो ये सारे बदलाव आते हैं-वे स्कूल जाते हैं। दोस्त बनाते हैं। खुद फैसले लेते हैं। प्राइवेसी की डिमांड करते हैं। अपने कमरे में अकेले समय बिताते हैं। इतने सालों में तब पहली बार ऐसा होता है कि आपके पास अपने लिए समय बचता है। तब मन पूछता है- 'अब मैं क्या करूं?' 'अब तो किसी को मेरी जरूरत ही नहीं।' क्या 34 की उम्र में नई शुरुआत मुमकिन नहीं? यह सबसे बड़ा मिथ है। 34 की उम्र में कोई देर नहीं हुई होती। एक्सपर्ट मानते हैं कि ये बेस्ट टाइम है। 34 की उम्र में आपके पास वह अनुभव है, जो 24 की उम्र में नहीं था। अब आपके पास ये चीजें हैं- बेहतर निर्णय क्षमता, धैर्य, भावनात्मक परिपक्वता, लोगों को समझने की योग्यता, समय प्रबंधन, जिम्मेदारी निभाने का अनुभव, यही गुण किसी भी अच्छे कर्मचारी और लीडर की पहचान होते हैं। कभी भी हो सकती है नई शुरुआत वयस्क विकास पर आधारित मनोवैज्ञानिक डैनियल लेविन्सन का काम बताता है कि जीवन कई चरणों में विकसित होता है। हरेक स्टेज में इंसान अपनी भूमिका और उद्देश्य का पुनर्मूल्यांकन करता है। करियर डेवलपमेंट एक्सपर्ट डोनाल्ड सुपर भी कहते हैं कि करियर जिंदगी में सिर्फ एक बार लिया गया फैसला नहीं है। यह एक प्रोसेस है, जो जिंदगी भर चलता है। समय के साथ बदलता और विकसित होता है। इसलिए सालों के करियर ब्रेक के बाद भी एक नई शुरुआत की संभावना कभी खत्म नहीं होती। इसलिए यात्रा शुरू करने से पहले आप खुद से ये 5 सवाल पूछिए- क्या मुझे नई चीजें सीखना अच्छा लगता है? क्या मैं फिर से काम शुरू करना चाहती हूं? क्या मुझे लोगों के साथ काम करना पसंद है? क्या मैं नई तकनीक सीख सकती हूं? क्या मैं अपने लिए समय निकाल सकती हूं? आपकी जॉब स्किल्स कैसी हैं? यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा हूं। नीचे ग्राफिक्स में 5 सेक्शंस में कुल 16 सवाल हैं। आपको इन सवालों को 1 से 5 के स्केल पर रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए अगर आपका जवाब 'बिल्कुल नहीं' है तो 1 नंबर दें और अगर आपका जवाब 'हमेशा' है तो 5 नंबर दें। अंत में अपना टोटल स्कोर देखें। इस ग्राफिक में कोई स्कोर इंटरप्रिटेशन नहीं है क्योंकि नंबर कम हों या ज्यादा, उससे ये निष्कर्ष नहीं निकलता कि आप कोई नया काम शुरू नहीं कर सकतीं। संगठन और प्रबंधन- मैं एक साथ कई काम संभाल सकती हूं। मैं टाइम मैनेजमेंट अच्छा करती हूं। मैं प्राथमिकताएं तय कर सकती हूं। मैं अचानक आई समस्या का हल निकाल लेती हूं। लोगों के साथ काम- मैं विवाद शांत करा सकती हूं। मैं धैर्यपूर्वक सुनती हूं। मैं लोगों की भावनाएं समझ लेती हूं। मैं फैमिली मेंबर्स के बीच संतुलन बना सकती हूं। नेतृत्व- मैं दूसरों को प्रेरित कर सकती हूं। मैं निर्णय लेने से नहीं डरती। जरूरत पर पूरा जिम्मा खुद ले लेती हूं। सीखने की क्षमता- मुझे नई चीजें सीखना अच्छा लगता है। मैं तकनीक सीखने के लिए तैयार हूं। मैं फीडबैक लेकर खुद को सुधार सकती हूं। आत्मविश्वास- मैं दोबारा काम सीख सकती हूं। मैं नई शुरुआत के लिए तैयार हूं। आपके स्किल्स क्या हैं? जॉब के लिए जिन भी स्किल्स की जरूरत होती है, घर संभालते हुए आपने वो स्किल्स पहले ही सीख लिए हैं, जैसेकि- प्रोजेक्ट मैनेजमेंट, टाइम मैनेजमेंट, बजट मैनेजमेंट, नेगोशिएशन, क्राइसिस मैनेजमेंट, लीडरशिप, इमोशनल इंटेलीजेंस, प्रॉब्लम सॉल्विंग, टीम कोऑर्डिनेशन इवेंट प्लानिंग एडमिनिस्ट्रेशन। करियर ब्रेक से आपका टैलेंट और क्षमता खत्म नहीं हो जाते। कई बार गृहणियों के पास संगठन, धैर्य और नेतृत्व जैसी क्षमताएं कॉर्पोरेट कर्मचारियों से भी बेहतर होती हैं। जरूरत सिर्फ उन्हें पहचानने और नए संदर्भ में पेश करने की है। चार हफ्तों का 'कमबैक' प्लान-सप्ताह 1 खुद को दोबारा पहचानिए। अपनी सभी डिग्रियां निकालिए। पुराने अनुभव एक डायरी में लिखिए। घर की जिम्मेदारियों की सूची बनाइए। रोज 20 मिनट लिखिए- 'मुझे क्या पसंद है?' तीन लोगों से अपनी ताकत पूछिए। सप्ताह 2- करियर तलाशिए, पांच संभावित क्षेत्रों की सूची बनाइए। एक ऑनलाइन कोर्स शुरू कीजिए।अपना सीवी तैयार कीजिए। लिंकडेन में अपना प्रोफाइल बनाइए। दो पेशेवर लोगों से बात कीजिए। सप्ताह 3-वर्क कल्चर में वापसी, सीधे मैं अपने लिए समय निकाल सकती हूं? क्या फुल-टाइम नौकरी करना जरूरी नहीं। किसी पार्ट टाइम काम से शुरुआत करिए। पहले खुद को नए माहौल में सहज बनाइए। सप्ताह में 1-2 दिन वॉलंटियर करिए। समय पर पहुंचने का अभ्यास करिए। टीम के साथ काम करने का अभ्यास करिए। अपनी नई उपलब्धियों को डायरी में लिखिए। सप्ताह 4-नौकरी की शुरुआत रोज दो आवेदन भेजिए। इंटरव्यू की तैयारी करिए।